Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 02 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 07 जून 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

राम, महावीर आदि सभी का कोई आराध्य देवता है तो वह अहिंसा है।

If there is any God for adoration for ram, Mahaveer etc. that is nonviolence only.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

छत्तीसगढ़ भाजपा के चुनाव प्रबंधन समिति की बैठक में मुख्यमंत्री साय ने की शिरकत

छत्तीसगढ़ में बीजेपी ने कांग्रेस के बड़े-बड़े सूरमा को चूरमा बना दिया : सीएम विष्णुदेव साय

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के बड़े-बड़े सूरमा को हमारे प्रत्याशियों ने चूरमा बना दिया। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री को पटखनी देकर और चार-चार पूर्व मंत्रियों को हराकर हमारे प्रत्याशी आए हैं। मैं सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। चुनाव में जनता के आशीर्वाद से मिली ऐतिहासिक जीत के बाद जिम्मेदारी और बढ़ गई है। जिस पर हम सबको खरा उतरना है।

प्रदेश भाजपा कार्यालय में आयोजित चुनाव प्रबंधन समिति की बैठक में शामिल होने पहुंचे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने उक्त बातें कही और छत्तीसगढ़ के सभी नवनिर्वाचित लोकसभा सदस्यों को जीत की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ में भाजपा को ऐतिहासिक जीत मिली और केंद्र में भी एनडीए गठबंधन की सरकार बनने जा रही है। यह जीत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर छत्तीसगढ़ की जनता की मुहर है। इस ऐतिहासिक परिणाम के लिए प्रदेश की जनता को धन्यवाद, बधाई एवं शुभकामनाएं। श्री साय ने भाजपा कार्यकर्ताओं को जीत की बधाई देते हुए कहा कि तपती गर्मी में पार्टी के कार्यकर्ता, संगठन के

जनता के भरोसे ने जिम्मेदारी और बढ़ाई

पदाधिकारी, चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक एवं सदस्यों के कठिन परिश्रम की बदौलत हमें ऐतिहासिक परिणाम प्राप्त हुए हैं। इसके लिए सभी को बहुत-बहुत बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ। पड़ोसी राज्य झारखंड और ओडिशा की जीत का श्रेय राज्य के मंत्रियों, भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं को देते हुए उन्होंने कहा कि सबके अथक मेहनत से हमनें दोनों राज्यों में भाजपा का परचम लहराया है। विधानसभा चुनाव 2023 में भाजपा ने 54 सीटों के साथ 46 प्रतिशत वोट प्राप्त किये थे और अब लोकसभा चुनाव में 6 प्रतिशत वोटों की वृद्धि हुई है,

अब हमें केंद्र एवं राज्य सरकार की सभी जन कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाना है : किरण सिंहदेव

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने चुनाव प्रबंधन समिति की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार विधानसभा चुनाव के दौरान किए अपने सभी वादों को प्रदेश में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में तेजी के साथ पूरा कर रही है। अब हमें केंद्र एवं राज्य सरकार की सभी जन कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाना है, ताकि सरकार की योजनाओं का लाभ प्रदेश में अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को भी मिल सके। पहले मिथक बन चुका था कि छत्तीसगढ़ कांग्रेस का गढ़ बन गया है लेकिन भाजपा कार्यकर्ताओं के कठोर परिश्रम और छत्तीसगढ़ की जनता ने उस मिथक को तोड़ दिया और भाजपा अब पंचायत, नगरीय निकाय सहित विधानसभा एवं लोकसभा में भी अपना परचम लहरा रही है। श्री देव ने चुनाव प्रबंधन समिति के सभी लोगों को कुशल चुनाव प्रबंधन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ दी है।

जिससे कि 68 विधानसभा सीटों में हमें जीत प्राप्त हुई है। इस पर उन्होंने कहा कि प्रदेश में हमारी सरकार है और अब लोकसभा में जनता ने प्रचंड जीत दिलाकर बहुत बड़ी जिम्मेदारी दी है। पड़ोसी राज्य ओडिशा और झारखंड में भाजपा की जीत पर उन्होंने कहा कि दोनों राज्यों में आयोजित जनसभा के दौरान मुझे मंच में आधे से ज्यादा हमारे छत्तीसगढ़ के नेताओं की मौजूदगी नजर आती थी। सबके प्रयासों से दोनों राज्यों में भाजपा इस मुकाम पर पहुंची है।

ये रहे मौजूद : कार्यक्रम का संचालन प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष भूपेंद्र सवन्नी एवं आभार प्रदर्शन प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती सरला कोसरिया ने किया। बैठक में उप मुख्यमंत्री अरुण साय, प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय, मंत्री रामविचार नेताम, नव निर्वाचित सांसद बृजमोहन अग्रवाल, संतोष पांडेय, विजय बघेल, श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, महेश कश्यप, भोजराज नाग, चिंतामणि महाराज, श्रीमती कमलेश जांगड़े, राधेश्याम राठिया, तोखन साहू, प्रेमप्रकाश पांडेय, संजय श्रीवास्तव, जगदीश (रामू) रोहरा, भरतलाल वर्मा व रामजी भारती सहित लोकसभा प्रबंध समिति के सभी 38 समितियों के संयोजक-सहसंयोजक एवं सदस्य मौजूद रहे।

सीआईएसएफ जवान ने कंगना रनौत को जड़ा थप्पड़, चंडीगढ़ से जा रही थीं दिल्ली

चंडीगढ़ (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव में हिमाचल प्रदेश की मंडी सीट से कंगना रणौत के सिर जीत का ताज सजा है। कंगना ने कांग्रेस प्रत्याशी विक्रमादित्य सिंह को हराया है। आज चंडीगढ़ से दिल्ली जाते से मोहाली एयरपोर्ट पर महिला सिपाही ने कंगना रनौत को थप्पड़ जड़ दिया। चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर दोपहर 3:40 बजे सीआईएसएफ की कुलविंदर कौर ने कंगना को थप्पड़ मारने का आरोप है। जब वह चंडीगढ़ से दिल्ली वापस जा रही थीं। बताया जा रहा है कि किसानों पर कंगना के दिए बयान को लेकर महिला सिपाही नाराज थी। लोकसभा चुनाव में हिमाचल प्रदेश की मंडी सीट पर भाजपा प्रत्याशी बॉलीवुड क्वीन कंगना रणौत के सिर जीत का ताज सजा है। कंगना ने मंडी की बाजी मार ली, वहीं कांग्रेस प्रत्याशी विक्रमादित्य सिंह को हार का सामना करना पड़ा है।

नरेंद्र मोदी 9 जून को प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे, सांसदों को दिल्ली बुलाया गया

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे आने के बाद भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) केंद्र में सरकार बनाने के लिए तैयार है। वह 8 जून को दावा पेश करेगी। रिपोर्ट के मुताबिक, इसके बाद नरेंद्र मोदी 9 जून को प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी देश नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान के राष्ट्र प्रमुखों को न्योता दिया गया है।इससे पहले 7 जून को संसदीय दल की बैठक होगी।

संसदीय दल की बैठक सुबह 11 बजे संसद के सेंट्रल हॉल में होगी। इसके बाद 8 जून को मोदी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को सभी सांसदों का समर्थन पत्र सौंपेंगे।बैठक में एनडीए के सांसदों के बीच मंत्रालयों के बंटवारे पर भी सहमति बनाने की कोशिश होगी। बता दें, मोदी ने बुधवार को राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा सौंपा था। राष्ट्रपति ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर 17वीं लोकसभा भंग कर दी। हालांकि, नई सरकार के गठन तक मोदी कार्यवाहक प्रधानमंत्री हैं।

लोकसभा चुनाव के अंतिम नतीजों में एनडीए को 292 सीटें मिली हैं, जबकि इंडिया गठबंधन के हिस्से 234 सीटें आई हैं। अन्य के खाते में 17 सीटें गई हैं। भाजपा को 240 और कांग्रेस को 99 सीटें मिली हैं। इसके बाद समाजवादी पार्टी (सपा) को 37, गठबंधन कांग्रेस को 29, द्रविड़ मुनेत्र कडगम (डीएमके) को 22, टीडीपी को 16, जेडीयू को 12, दलित (उद्धव) को 9, एनसीपी (शरद) को 8 और दलित (शिंदे) को 7 सीटें मिलीं।

चंद्रबाबू नायडू 9 जून को शपथ लेने वाले थे, जिसमें उन्होंने मोदी को प्रधानमंत्री के तौर पर आमंत्रित किया था, लेकिन केंद्र में सरकार बनाने को लेकर असमंजसता थी। बुधवार को स्थिति साफ हुई तो नायडू ने अपने शपथ की तारीख 12 जून कर दी।

नई सरकार के गठन से पहले जेपी नड्डा के आवास पर भाजपा की अहम बैठक

अमित शाह भी मौजूद

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद भाजपा नीत एनडीए सरकार बनाने की प्रक्रिया में जुट चुकी है। मंगलवार को जारी नतीजों के बाद नरेंद्र मोदी एक बार फिर प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेंगे। इस शपथ समारोह से पहले आज भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर बैठक बुलाई गई। इस बैठक में भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह और राजनाथ सिंह समेत कई अन्य नेता भी मौजूद रहे।

इस बैठक में गठबंधन पार्टियों का मंत्रिमंडल में स्थान से लेकर पार्टियों के नेताओं के चयन जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। कार्यवाहक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने को लेकर एनडीए की शुक्रवार को बैठक होने की संभावना है। अगले हफ्ते तक नई सरकार के शपथ लेने की उम्मीद है। लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे नरेंद्र मोदी ने बुधवार को गठबंधन पार्टियों के साथ एक बैठक की।

इन दो पार्टियों पर निर्भर है नई सरकार : भाजपा की सहयोगी पार्टी जनता दल (जेडीयू) के नेताओं ने भी पार्टी अध्यक्ष नीतीश कुमार के साथ विचार विमर्श किया। हालांकि, अबतक क्षेत्रीय पार्टियों ने किसी भी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। सूत्रों के अनुसार, क्षेत्रीय पार्टियां केंद्रीय सरकार में कई अहम मंत्री पद की मांग कर सकते हैं। एनडीए गठबंधन में 19 सांसदों के साथ तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) के साथ सबसे बड़ी पार्टी और 12 सांसदों के साथ जनता दल दूसरी सबसे बड़ी पार्टी है। भाजपा के नेतृत्व वाली नई सरकार इन दो पार्टियों पर निर्भर हैं।

राहुल गांधी ने स्टॉक मार्केट में बड़े घोटाले के लगाए आरोप, बोले- झूठे एग्जिट पोल क्यों दिखाए गए

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने स्टॉक मार्केट में बड़े घोटाले का आरोप लगाया है. उन्होंने कहा, पहली बार हमने देखा कि चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृह मंत्री और वित्त मंत्री ने शेयर बाजार पर टिप्पणी की. प्रधानमंत्री ने कहा कि शेयर बाजार बहुत तेजी से बढ़ रहा है. केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि 4 जून को शेयर बाजार में तेजी रहेगी और आप सभी को निवेश करना चाहिए और ऐसा ही वित्त मंत्री ने भी कहा. अमित शाह कहते हैं कि 4 जून से पहले शेयर खरीद लें, 19 मई को पीएम मोदी कहते हैं शेयर 4 जून को बाजार तोड़ देगा सारे रिकॉर्ड.

कांग्रेस नेता राहुल गांधी का कहना है, प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री ने शेयर बाजार में निवेश करने वाले पांच करोड़ परिवारों को विशिष्ट निवेश सलाह क्यों दी? क्या निवेश सलाह देना उनका काम है? दोनों साक्षात्कार एक ही मीडिया को क्यों दिए गए जिसके मालिक हैं वही कारोबारी समूह जो स्टॉक में हेराफेरी के लिए सेबी की जांच के दायरे में है. भाजपा के फर्जी एग्जिट पोल करने वालों और संदिग्ध विदेशी निवेशकों के बीच क्या संबंध है, जिन्होंने एग्जिट पोल की घोषणा से एक दिन पहले निवेश किया और भारी मुनाफा कमाया? हम इसमें जेपीसी की मांग करते हैं.

हमें विश्वास है कि किसी ने भारतीय खुदरा निवेशकों की कीमत पर हजारों करोड़ रुपये कमाए हैं और प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री ने इसे खरीदने का संकेत दिया है. इसलिए हम आज इसकी जांच के लिए एक संयुक्त संसदीय समिति की मांग करते हैं.

आपको बता दें कि लोकसभा चुनाव परिणाम में भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं मिला है. भाजपा 240 सीटों पर सिमट गई है. मगर एनडीए को 293 सीटें मिली हैं. वहीं इंडिया अलायंस को 234 सीटें मिली हैं. परिणाम ने आने से पहले तीन जून को सभी एग्जिट पोल भाजपा को 300 पार दिखा रहे थे. वहीं एनडीए को 400 का आंकड़ा पार दिखा रहे थे. मगर 4 जून को जब रिजल्ट सामने आए तो कोई एग्जिट पोल सही साबित नहीं हुआ. **-कमल नैन नारंग**

10 या 11 जून को बस्तर के रास्ते छत्तीसगढ़ में दस्तक देगा मानसून!

इस वर्ष समय पूर्व आएगा मानसून

रायपुर (आरएनएस)। मौसम वैज्ञानियों के मुताबिक छत्तीसगढ़ में प्री-मानसूनी गतिविधियां दिख रही है। इस बार मानसून समय से पहले छत्तीसगढ़ में दस्तक देने वाला है। मौसम में बदलाव से छत्तीसगढ़ में धीरे-धीरे तापमान भी कम होने लगेगा। गर्मी से थोड़ी राहत मिलेगी। मानसून आने से पहले तेज हवा का चलना और कई हिस्सों में तेज गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश होने जैसी गतिविधियां देखने को मिलेगी। मानसून 10 से 11 जून को बस्तर संभाग से होते हुए छत्तीसगढ़ में प्रवेश करेगा। 14 जून तक रायपुर और 18 से 20 जून तक पूरे छत्तीसगढ़ में सक्रिय हो जाएगा।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक दक्षिण-पश्चिम मानसून तेजी से आगे बढ़ रहा है। मानसून की उत्तरी सीमा गोवा, नारायणपेट, नरसापुर से होकर गुजर रही है। ढ्रस्ष्ठ के मुताबिक अगले 3 से 5 दिनों में कर्नाटक के शेष हिस्सों, दक्षिण महाराष्ट्र के कुछ भागों, तेलंगाना और तटीय आंध्र प्रदेश के कुछ और भाग, दक्षिण छत्तीसगढ़ यानी बस्तर और दक्षिण ओडिशा के कुछ भागों में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल है।

आईएमडी के अनुसार गुरुवार 6 जून को छत्तीसगढ़ सहित कई राज्यों में आंशिक रूप से बादल छाए रहने, आंधी या गरज के साथ हल्की बारिश होने और तेज हवाएं चलने का अनुमान है। आज अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा तथा उप-हिमालयी प.बंगाल और सिक्किम में गरज, बिजली और तेज हवाओं के साथ हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।

बीआईओएम बचेली कॉम्प्लेक्स में भूवैज्ञानिक पी.एन. बोस जी की प्रतिमा का अनावरण

बचेली (विश्व परिवार)। दिनांक 6 जून 2024 को भूवैज्ञानिक श्री पी. एन. बोस (प्रमथ नाथ बोस) की प्रतिमा का अनावरण एनएमडीसी बचेली के निक्षेप क्रमांक 5 में अधिशासी निदेशक श्री बी. वेंकटेश्वरलु के करकमलों से संपन्न हुआ। इस अवसर पर बचेली परियोजना के सभी विभागाध्यक्ष, श्रमिक संघों एसकेएमएस एवं एमएमडब्ल्यूयू के पदाधिकारीगण, विभिन्न अधिकारी व कर्मचारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

ज्ञातव्य है कि श्री पी. एन. बोस ने सन 1899 से 1903 तक बैलाडीला (बस्तर) क्षेत्र में कार्य किया एवं बैलाडीला आयरन ओर निक्षेपों की खोज की। श्री बोस के इस अन्वेषण से ही बैलाडीला क्षेत्र में लगभग 14 लौह अयस्क निक्षेपों का पता चला। इसी के फलस्वरुप एनएमडीसी ने यहां उत्खनन का कार्य आरंभ किया एवं पिछले लगभग 60 वर्षों से निरंतर लौह अयस्क का उत्खनन एनएमडीसी द्वारा किया जा रहा है।

श्री पी. एन. बोस के महान अन्वेषण को सम्मान देने और उनके प्रति एनएमडीसी की ओर से कृतज्ञता व्यक्त करने के उद्देश्य से इस प्रतिमा की स्थापना की गई है।

उत्तर प्रदेश की जनता ने राजनीति में फिर से किया पुराना आदर्श स्थापित : प्रियंका

दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में अपनी पार्टी के प्रदर्शन के लिए जनता और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए को कहा कि अवाम ने आज की राजनीति में एक पुराना आदर्श फिर से स्थापित किया है। प्रियंका ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किए गए संदेश में कहा, उप्र कांग्रेस के मेरे सभी साथियों को मेरा सलाम। मैंने आपको धूप और धूल में कड़ी मेहनत करते हुए देखा, आप झुके नहीं, आप रुके नहीं, कठिन से कठिन दौर में आपने लड़ने की हिम्मत दिखाई। आपको प्रताड़ित किया गया, आप पर फर्जी मुक़दमे लगाये गये, जेल में डाला गया, बार-बार नज़रबंद किया गया, मगर आप डरे नहीं। कई नेता डर के चले गये, आप टिके रहे।

उन्होंने इसी संदेश में कहा, मुझे गर्व है आप पर और उत्तर प्रदेश की जागरूक जनता पर, जिसने इस देश की गहराई और सच्चाई को समझा और हमारे संविधान को बचाने का ठोस संदेश पूरे भारत को दिया। कांग्रेस महासचिव ने कहा, आपने आज की राजनीति में एक पुराना आदर्श फिर से स्थापित किया है कि जनता के मुद्दे सर्वोपरि हैं, इनको नकारने की क़ीमत भारी होती है। चुनाव जनता का है, जनता ही लड़ती है, जनता ही जीतती है। कांग्रेस ने पिछले दिनों संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में 17 सीट पर चुनाव लड़ा था जिनमें से उसे छह सीट पर कामयाबी मिली जबकि 11 पर वह दूसरे स्थान पर रही।

महाराष्ट्र में सियासी हलचल तेज, अजित खेमे के कई विधायक शरद पवार के संपर्क में

मुंबई (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव के नतीजों में महाराष्ट्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को बड़ा झटका लगा है। एनडीए को इस बार केवल 17 सीटों पर जीत मिली है, जबकि पिछले चुनावों में 43 सीटों पर जीत का परचम लहराया था। अब नतीजों के बाद राज्य में सियासी हलचल तेज हो गई है। खबर है कि अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के कई विधायक शरद पवार के संपर्क में हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अजित के खेमे में जा चुके एनसीपी के एक दर्जन से ज्यादा विधायक घर वापसी करना चाहते हैं। इनमें से कई विधायक सुप्रिया सुले, प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटील और रोहित पवार के संपर्क में हैं। पाटिल ने इस बात की पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि बहुत से लोग संपर्क में हैं, लेकिन अभी पार्टी के अंदर फैसला नहीं हुआ है। 9 जून को पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक होगी, उसमें फैसला होगा।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने करनाल से विधायक पद की शपथ ली

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के करनाल से भारतीय जनता पार्टी के विधान सभा सदस्य (एमएलए) के रूप में शपथ लेने के बाद, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने उन पर भरोसा जताने के लिए करनाल के लोगों को धन्यवाद दिया। उन्होंने हरियाणा राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों में विजयी होने का विश्वास व्यक्त किया। मीडिया को संबोधित करते हुए नायब सिंह सैनी ने कहा कि मैं उप-चुनाव में मुझे विजयी बनाने के लिए करनाल की जनता के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं। इस जीत के साथ, करनाल की जनता ने आगामी विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी की जीत पर अपनी मुहर लगा दी है।

सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी भारी जनादेश हासिल करेगी और लगातार तीसरी बार हरियाणा में सरकार स्थापित करेगी। उन्होंने आगे कहा, पीएम नरेंद्र मोदी के पिछले साढ़े नौ साल के शासनकाल में हरियाणा ने सबका साथ, सबका विकास के आदर्श वाक्य के साथ विकास में नई ऊंचाइयां हासिल की हैं। जिस तरह से हरियाणा बिना किसी क्षेत्रवाद की भावना और भ्रष्टाचार के नेतृत्व कर रहा है। सभी के कल्याण की दिशा में काम करते हुए भविष्य में भी मोदी जी के नेतृत्व में इसी गति से विकास होगा।

इससे पहले, सुबह हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता के प्रशासन के तहत हरियाणा विधानसभा परिसर में करनाल के विधायक के रूप में शपथ ली। नायब सिंह सैनी ने हाल ही में करनाल विधानसभा क्षेत्र में विधानसभा उपचुनाव जीता था। इससे पहले, वह कुरुक्षेत्र लोकसभा क्षेत्र से सांसद के रूप में कार्यरत थे और लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा से ठीक पहले उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। वह हरियाणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भी रहे। इस बीच, हरियाणा में लोकसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। पार्टी ने 5 सीटें जीतीं और कांग्रेस ने भी 5 सीटें जीतीं।

नगरीय निकाय एवं स्वास्थ्य विभाग का अमला अलर्ट रहें : सीएम साय

रायपुर (आरएनएस)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने वर्षाजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए सभी आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश अधिकारियों को दिए हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने मानसून के दौरान संभावित बीमारियों की रोकथाम के लिए अधिकारियों को राजधानी से लेकर ग्राम पंचायत तक लगातार सतर्क रहने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रदेश के सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य केन्द्रों में सभी आवश्यक जीवन रक्षक दवाइयों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा है।

मुख्यमंत्री ने हैंडपंप, नलकूप, एवं जल स्त्रोतों की मरम्मत, साफ-सफाई और क्लोरिनेशन कराने के भी निर्देश दिए हैं। ब्लीचिंग पाउडर और क्लोरिन टैबलेट की पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। मुख्यमंत्री ने वर्षाजन्य बीमारियों एवं अन्य समस्याओं से निपटने के लिए प्रशासनिक अमले के साथ लोकस्वास्थ्य यांत्रिकी, नगरीय निकाय एवं स्वास्थ्य विभाग के अमले को अलर्ट रहने को कहा है। पेयजल स्त्रोतों की सफाई जैसे छोटे-छोटे उपायों से इन बीमारियों के प्रकोप से बचा जा सकता है। राज्य में संक्रामक बीमारियों की दृष्टि से संवेदनशील गांवों और इलाकों में स्वास्थ्य विभाग के अमले द्वारा लगातार निगरानी रखी जानी चाहिए। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि जशपुर अंचल सहित ऐसे क्षेत्र जहा सर्पदंश के मामले ज्यादा आते हैं उन इलाकों में बचाव के लिए लोगों को जागरूक किया जाए। साथ ही सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में एन्टी स्नेक वेनम की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ ही स्वास्थ्य केन्द्रों में सर्पदंश के प्रकरणों को हैण्डल करने के लिए चिकित्सक एवं प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी उपलब्ध रहें।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, शुक्रवार 07 जून 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

भारतीय स्टेट बैंक के सौजन्य से मिनीमाता कन्या महाविद्यालय में मनाया गया पर्यावरण दिवस

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आज 5 मई को भारतीय स्टेट बैंक की मुख्य शाखा ने मिनीमाता कन्या महाविद्यालय का पौध रोपण हेतु चयन कर महाविद्यालय परिसर में नीम के 10 पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मुख्य शाखा प्रबंधक देवेंद्र दुबे ने इस अवसर पर कहा कि पूरे देश ने हाल ही के दिनों में रिकॉर्ड तोड़ गर्मी देखी है। देश की राजधानी दिल्ली में पारा 52 डिग्री सेलसियस के पार पहुंच गया था। गर्मी की विभीषिका और कहर से पशु पक्षी क्या आदमियों ने भी दम तोड़ा है। उन्होंने कहा कि विकास के नाम पर निर्दयता पूर्वक वन काटे जा रहे हैं। शहर वृक्ष विहीन होते जा रहे हैं। पर्यावरण का संरक्षण करने की जगह पर्यावरण का क्षरण हो रहा है। आज हमने नीम के जो पौधे लगाए हैं वे कल को वृक्ष बनेंगे। इससे न केवल शीतल छाया मिलेगी वरन नीम के औषधीय गुणों से शरीर स्वस्थ रहेगा। उन्होंने प्राचार्य डॉ कल्पना उपाध्याय से आग्रह किया कि आने वाले दिनों में नए शिक्षण सत्र में महाविद्यालय की प्रत्येक छात्रा को कम से कम एक पौधा लगाने हेतु प्रेरित करें व वर्ष भर पौधे की जतन कर वृक्ष बनाएं। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह एक बड़ा कदम होगा जिसका लाभ आने वाली पीढ़ी तक को मिलेगा। महाविद्यालय की प्राचार्य ने इस पुनीत कार्य के लिए शाखा प्रबंधक दुबे जी के प्रति आभार व्यक्त किया इस अवसर पर महाविद्यालय की खेल अधिकारी सुलेखा राउत व जन भागीदारी के पूर्व सदस्य एस एम पाध्ये उपस्थित थे।

अवैध शराब पर आबकारी विभाग की कार्रवाई

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर के.एल चौहान के निर्देश पर जिले में अवैध शराब निर्माण, भंडारण एवं परिवहन पर आबकारी विभाग द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी तारतम्य में 4 जून 2024 को गस्त के दौरान कसडोल क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम दलदली में आबकारी विभाग की टीम द्वारा की गई कार्यवाही में 10 बल्क लीटर महुआ शराब एवं 60 कि.ग्राम. महुआ लाहन आरोपी से जप्त कर आबकारी कब्जे में लिया है।

कलेक्टर केएल चौहान ने सफलता पूर्वक निर्वाचन संपन्न होने पर अधिकारी-कर्मचारी, मीडिया प्रतिनिधियों सहित अन्य सभी वर्गो के प्रति जताया आभार

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के एल चौहान ने सफलता पूर्वक निर्वाचन संपन्न होने पर अधिकारी-कर्मचारी, मीडिया प्रतिनिधियों सहित अन्य सभी वर्गो के प्रति अपना आभार जताया। उन्होने कहा की लोकसभा निर्वाचन 2024 की प्रक्रिया निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो गई लोकसभा निर्वाचन 2024 के कार्य में जिले के समस्त शासकीय अधिकारियों कर्मचारियों के द्वारा सौंपे गये दायित्वों का निर्वहन भली भांति एवं पूरी निष्पक्षता के साथ सफलतापूर्वक सम्पादित किया गया। जिले के इलेक्ट्रानिक/प्रिंट मीडिया, स्थानीय जन प्रतिनिधियों तथा गणमान्य नागरिकों के द्वारा भी लोकसभा निर्वाचन 2024 के दौरान सकारात्मक सहयोग प्रदान किया गया। इलेक्ट्रानिक / प्रिंट मीडिया के द्वारा भी मतदाता को जागरूक करने, सूचनाओं को त्वरित जनमानस तक पहुंचाने, अफवाहों से बचाने एवं निष्पक्ष मतदान में भाग लेने हेतु प्रेरित करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। इसके साथ ही महिला अधिकारियों/ कर्मचारियों के द्वारा चुनाव प्रक्रिया में भाग लेते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन बड़े उत्साह से किया गया। विशेषकर संगवारी मतदान दल में शामिल महिला कर्मचारियों का प्रयास अत्यधिक सराहनीय रहा, जिनकी जितनी भी प्रशंसा की जावे, वह कम है। वीडियो निगरानी टीम, वीडियो अवलोकन टीम, व्यय लेखा टीम काल सेंटर, मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मानिटरिंग कमेटी, उड़नदस्ता, स्थैतिक निगरानी दल, मतदान दलों के द्वारा भी अपने दायित्वों का निर्वहन जिस तत्परता से किया गया, वह भी सराहनीय है। स्वीप के तहत जिले में शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने हेतु पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा चलाया गया जागरूकता अभियान प्रशंसनीय रहा, जिसमें विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, महिला स्व सहायता समूह, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास से हमें इसमें सफलता मिली। अभियान के दौरान हमने एतिहासिक 5 गोल्डन बुक आफ रिकार्डस भी बनाये, जो आप सभी के सामूहिक प्रयास एवं मेहनत का नतीजा है। पुलिस प्रशासन के द्वारा भी अपने कार्यों का सम्पादन पूरी दक्षता एवं तत्परतापूर्वक किया गया, जिसके कारण जिले में कहीं पर भी कानून एवं व्यवस्था की स्थिति निर्मित नहीं हुई। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त प्रेक्षकों के द्वारा भी समय समय पर जिला प्रशासन को दिये गये मार्गदर्शन से भी निष्पक्ष चुनाव कराने में मदद मिली। लोकसभा निर्वाचन 2024 के सफलतापूर्वक सम्पादन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करने हेतु जिला प्रशासन इन सभी का आभारी है।

चेंबर प्रतिनिधिमंडल एवं टेक्निकल टीम राज्य जीएसटी आयुक्त रजत बंसल से मिला

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत ई-वे बिल से संबंधित पूर्व अधिसूचना क्र. 10-31/2018/वाक/पांच(46) को यथावत रखने हेतु किया निवेदन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि आज चेंबर अध्यक्ष श्री अमर परवानी जी के नेतृत्व में चेंबर प्रतिनिधिमंडल ने राज्य जीएसटी आयुक्त श्री रजत बंसल जी से मुलाकात कर ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत ई-वे बिल से संबंधित पूर्व अधिसूचना को यथावत रखने तथा राज्य के विभिन्न जिलों के व्यापारियों को जीएसटी विभाग द्वारा व्यापारियों को दिए जा रहे विभिन्न नोटिसों पर स्वत: रोक लगाने प्रदेश भर के व्यापारियों से प्राप्त नोटिस की प्रतिलिपि सहित ज्ञापन सौंपा। जिस पर राज्य जीएसटी आयुक्त श्री रजत बंसल जी ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए उचित कदम उठाने की बात कही। इस अवसर पर एडिशनल कमिश्नर श्री टी.आर.धुर्वे जी एवं डिप्टी कमिश्नर श्री मनीष मिश्रा जी भी मौजूद रहे।

चेंबर प्रदेश अध्यक्ष अमर परवानी ने बताया कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत ई-वे बिल से संबंधित पूर्व अधिसूचना को यथावत रखने चेंबर ने राज्य जीएसटी आयुक्त श्री रजत बंसल जी को ज्ञापन सौंपा तथा ई-वे बिल की संख्या एवं अनुपालन से संबंधित बढ़ती जटिलताओं पर विस्तृत चर्चा की। पारवानी ने आगे बताया कि नए अधिनियम की जटिलता, पोर्टल की अनभिज्ञता के साथ, अनजाने में त्रुटियां और अनुपालन में देरी हुई है अत: विभाग द्वार प्रदेश एवं जिलों के व्यापारियों को लगातार भेजे जा रहे विभिन्न नोटिस जैसे जीएसटीआर-1 फॉर्म देर से दाखिल करने हेतु जुर्माना नोटिस इत्यादि पर रोक लगाई जाए।

जमाअत ए इस्लामी हिंद रायपुर द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। जमाअत ए इस्लामी हिंद, रायपुर द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमे पौधा वितरण, वृक्षारोपण, ड्राइंग कंपटीशन, स्पीच कंपटीशन, स्लोगन आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पर्यावरण दिवस के दिन सुबह जमाअत ए इस्लामी हिंद के सदस्यों द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर गार्डन, ऑक्सी जोन और व्हाइट हाउस गार्डन में पौधा वितरण किए उसके बाद अल फलाह टावर और जिम खाना ग्राउंड बैरन बाज़ार में वृक्षारोपण किया गया किया गया। शाम 7:00 से नगर निगम व्हाइट हाउस गार्डन में ड्राइंग कंपटीशन और स्पीच कंपटीशन रखा गया है जिसमें तकरीबन 150 बच्चों ने हिस्सा लिया बच्चों ने बहुत ही अच्छी-अच्छी पर्यावरण जागरूकता के लिए ड्राइंग बनाकर लेकर आए। ड्राइंग और स्पीच कंपटीशन में ग्रुप ए और बी के बच्चों को फर्स्ट सेकंड थर्ड प्राइस में मोमेंट के साथ नगद पुरस्कार दिया गया साथ ही इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले बच्चों को सांत्वना पुरस्कार भी दिया गया। इस प्रतियोगिता के जाज श्रीमती रेखा मैम, श्री नीरज सर, श्री शकीरा उल्ला खान रहे जिन्होंने ड्राइंग को बोहत ही बारीकी से जांच कर निर्णय लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनाब मुबीन खान साहब सेक्रेटरी सेक्रेटरी जमाअत ए इस्लामी हिंद रायपुर ने की, शहर अध्यक्ष उबैद खान कार्यक्रम में आए सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

पर्यावरण जागरूकता अभियान को सफल बनाने में जमाअत ए इस्लामी हिंद रायपुर के सदस्यों तूफैल कुरैशी, जुवेरिया साहेबा, मुजाहेदा साहेबा, फाकरा साहेबा, वायेजा खानम, सुमैया रूमान, अजहर साहब, मोहिब खान, यार खान, मुजाहिद साहब, स्वह. अलीम आदि ने अहम भूमिका निभाई।

महारानी अस्पताल में अब ओपीडी पर्ची के लिए आभा ऐप के क्यूआर कोड से करवा सकते हैं पंजीयन

स्वास्थ्य सुविधा के क्षेत्र में नई पहल

जगदलपुर (विश्व परिवार)। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन यथा आभा के अंतर्गत जिला चिकित्सालय महारानी अस्पताल जगदलपुर में मरीजों को ओपीडी पर्ची के लिए अब लाइन लगाने की आवश्यकता नहीं होगी। मरीज या परिजन घर बैठे ही मोबाइल ऐप आभा के माध्यम से अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं या इसके लिए उक्त ऐप के क्यूआर कोड का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा मोबाइल ऐप आभा क्यूआर कोड का उपयोग मरीज या परिजन अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। इस ऐप में मरीज का एक आभा कार्ड बनेगा जिसमें यूजर्स को एक 14 डिजिट का कार्ड नंबर मिलेगा। जिसमें मरीज के हेल्थ डायग्नोस्टिक व दवाई की पूरी जानकारी भी होगी। इससे देश में कहीं पर भी किसी भी डॉक्टर द्वारा मरीज की पूरी हेल्थ हिस्ट्री जानने में सहूलियत होगी। स्वास्थ्य एवं आरोग्य केंद्रों के सुदृढ़ीकरण और आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन यथा आभा के तहत इस ऐप के उपयोग के लिए निर्देश दिये गये हैं। इसके तहत यूजर्स को स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। इसके तहत कोई भी व्यक्ति आभा ऐप पर अपना आभा कार्ड बनवा सकते हैं। इसमें पंजीयन के लिए मरीज या परिजन को आभा ऐप या जिला चिकित्सालय महारानी अस्पताल जगदलपुर के ऐप का क्यूआर कोड का इस्तेमाल करना होगा।

आसान है आभा ऐप का उपयोग करना : जिला अस्पताल जगदलपुर के सिविल सर्जन डॉ. संजय प्रसाद ने इस बारे में बताया कि आभा ऐप का उपयोग कोई भी स्मार्ट मोबाईल धारक कर सकता है। ऐप या क्यूआर कोड के माध्यम से रजिस्टर्ड ऑप्शन में जाकर अपना मोबाइल नंबर और आधार कार्ड नंबर दर्ज कर रजिस्टर्ड करें। इसके बाद ओटीपी सत्यापन होगा और उपयोगकर्ता को अपना नाम, लिंग, जन्मतिथि, मोबाइल नम्बर व ईमेल का विवरण अपने मोबाइल पर स्वयं दर्ज करना होगा। इस ऐप से संबंधित क्यूआर कोड जिला चिकित्सालय महारानी अस्पताल जगदलपुर में चस्पा किया गया है एवं एक बार रजिस्ट्रेशन होने के पश्चात पुन: चिकित्सालय में फॉलोअप आने पर स्वयं अपना रजिस्ट्रेशन आभा नंबर के माध्यम से कर सकते हैं। इससे चिकित्सालय के ओपीडी के कतार में खड़े होने की आवश्यकता नहीं होगी।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.) फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजना, **सेजबहार,** रायपुर में स्थित भवन क्र. **एल.आई.जी.-1147, श्रीमती माधुरी साहू पति श्री धनेश्वर प्रसाद साहू,** के नाम पर इस कार्यालय का आदेश क्रमांक-68 दिनांक 12.04.2024 द्वारा नाम दर्ज किया गया है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्रीमती ललिता साहू पति श्री महेन्द्र कुमार साहू,** निवासी- ग्राम-गोविंदवन, पोस्ट एवं थाना व तहसील-बिलाईगढ़, जिला-सारंगढ़, बिलाईगढ़ (छ.ग.) के पक्ष में दिनांक **14.05.2024** को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में क्रेता **श्रीमती ललिता साहू पति श्री महेन्द्र कुमार साहू,** द्वारा उक्त भवन को फ्री-होल्ड पश्चात् अपने नाम पर नाम दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के नाम दर्ज करने के संबंध में किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार, रायपुर (छ.ग.) फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि गृह निर्माण मण्डल द्वारा दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **सेजबहार/दतरेंगा,** रायपुर में स्थित भवन क्र. **एल.आई.जी.-730, (1) श्री काशीनाथ शर्मा पिता स्व. श्री सत्यनारायण शर्मा,** पता- विश्वकर्मा चौक बढ़ईपारा, रायपुर (छ.ग.) द्वारा **मुख्त्यारआम शकिल खान रजा पिता श्री मुर्तुजा खान रजा,** निवासी- नूरानी चौक, राजातालाब, रायपुर (छ.ग.) **(2) श्री शकिल खान रजा पिता श्री मुर्तुजा खान रजा,** निवासी- नूरानी चौक, राजातालाब, रायपुर (छ.ग.), के नाम पर भवन 30 वर्ष के लीज में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित है, उक्त भवन को फ्री-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। जिनका **फ्री-होल्ड** संपरिवर्तन किया जाना है।

अत: किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को भवन का **फ्री-होल्ड** किये जाने में किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./11535/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11535
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107A00203** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **HEMKUMARI SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SUKHIRAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. NEETA KHODIYAR 2. AMIT KHODIYAR 3. KHUSHBOO CHOUHAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **CHANDRAKANT KHODIYAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./11805/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 05-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11805
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108A0530A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **HARISHANKAR NEEKHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **HARIRAM NEEKHRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NEETU SINGH GURUSINGHANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GURMUKH SINGH GURUSINGHANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./11933/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 06-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11933
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR652F01300** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KU. YUKTA DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE AJAY DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **LATA RAWAT** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O PARMESHWAR RAWAT** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./11823/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 06-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11823
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR652B00678** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ANIL JOSHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. VISHNU PRABHAKAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VINOD KUMAR JATWAR** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O BOHIT PRASAD JATWAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./11841/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 06-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11841
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR652B00055** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SARIKA MISHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOPAL MISHRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHIRIN KHAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O JAVED KHAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **MALMA BIKRINAMA & SHAPATH PATR**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./11600/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 06-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11600
वार्ड का नाम- 62 - शहीद राजीव पाण्डेय वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 62 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR654J00160** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **HEMLAL SINHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. SUKHRAM SINHA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BHUKHAN SINHA** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O SUKHRAM SINHA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **MALMA BIKRINAMA & SHAPATH PATR**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./11855/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 06-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11855
वार्ड का नाम- 36 - हवलदार अब्दूल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 36 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR737G00167** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **JASBIR SINGH AND OTHERS HUF JASBIR SINGH KESHAR SINGH BHASIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती रमिन्दर कौर भसीन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति- स्व. जसबीर सिंह भसीन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./11856/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 06-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11856
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR235G0285C** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RANJEET SINGH ARORA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SURENDRA SINGH ARORA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री संदीप वाकड़े** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री रामेश्वर राव वाकड़े** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./11225/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 05-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11225
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108A00437** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JIVANANDAN S/O JUGAL KISHORE, MAITRI SAVAT W/O JIVANANDAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JUGAL KISHORE SABAT** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RASAGYA AVAGADDA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANYASI RAO AVAGADDA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./11531/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-05-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11531
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR109C00438** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PREMIN DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NANDU DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **HITESH KUMAR JANGHEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **CHAMPA LAL JANGHEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./11607/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 05-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11607
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107B00266** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NARESH KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NICHAL DAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **JYOTI RATHOR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **INDRAJEET SINGH RATHOR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 7 जून 2024

कोरबा लोकसभा के विकास में नहीं होगी कोई राजनीति : ज्योत्सना महंत

दूसरी बार निर्वाचित सांसद ने बताई अपनी प्राथमिकताएं

कोरबा(विश्व परिवार)। लोकसभा क्षेत्र से दूसरी बार निर्वाचित सांसद ज्योत्सना चरणदास महंत ने कहा है कि जनता ने भाजपा की राष्ट्रीय नेत्री को हराकर मुझे फिर से सेवा के लिए सांसद चुना है। वे शोर मचाते रहे और हम खामोशी से अपना धर्म निभाते हुए सेवा करते रहे। कोरबा लोकसभा के विकास में कोई राजनीति नहीं होगी, सबका साथ लेकर सामूहिक पहल करेंगे। पूरे संसदीय क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं का समाधान के लिए पूरी इच्छाशक्ति से मिलकर काम होगा। आम जनता के लिए दरवाजे हमेशा खुले रहेंगे। सांसद ने कोरबा प्रेस क्लब तिलक भवन में पत्रवार्ता आहूत कर कहा कि उन्होंने जन अपेक्षाओं के अनुरूप कोरबा मेडिकल कालेज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अब वर्तमान चिकित्सा सुविधाओं की पूर्ति बिसाहू दास महंत स्मृति मेडिकल कालेज में कराने के साथ ही आ रही दिक्कतों का समाधान करना प्राथमिकता है। जल्द ही मेडिकल कालेज व ईएसआईसी प्रबंधन के साथ बैठक की जाएगी। कोरबा रेलवे स्टेशन का उन्नयन में तेजी लाने का काम होगा और गेवरा रोड स्टेशन में भी यात्री सुविधाओं का विस्तार करना प्राथमिकताओं में शामिल है। सांसद ने कहा कि यात्री ट्रेनों को यात्रियों की सुविधानुसार चलाने का प्रयास करना, कोयला, राखड़, प्रदूषण से निजात दिलाने, सार्वजनिक व निजी उपक्रमों के माध्यम से कोरबा के विकास में भागीदारी बढ़ाने, शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली, सडक़, पानी की व्यवस्था कराना प्राथमिकताओं में शामिल है। इसी तरह सडक़ों के कार्य मेरे काफी प्रयासों से प्रारंभ हुए हैं जिन्हें पूरा कराना है। प्रमुख रूप से कोरबा-कुसमुंडा, चाम्पा-उरगा, उरगा-पत्थलगांव, कोरबा-कटघोरा, पतरापाली-कटघोरा, कोरबा-कटघोरा सडक़ का कार्य जल्द पूर्ण कराने की दिशा में कार्य करेंगे। पत्रवार्ता के दौरान प्रेस क्लब द्वारा सांसद का सम्मान पुष्पगुच्छ भेंटकर किया गया। सांसद ने कहा कि कोरबा में ट्रैफिक की समस्या पर ध्यान देने की जरूरत है, यहाँ सडक़ दुर्घटना में लोग मारे जा रहे हैं, इस पर अंकुश लगाने के लिए ठोस कार्य योजना बनाई जाएगी। कोरबावासियों को फाटकों की समस्या से निजात दिलाने के लिए प्रस्तावित अंडरब्रिज के कार्य में प्रगति लाना, प्रदेश व केंद्र सरकार के जो भी विभाग हैं, उनसे मिलकर प्रयास करूंगी। सुनालिया चौक के निकट निर्मित मल्टीलेवल पार्किंग को उपयोग में लाने के लिए प्रयास, हसदेव नदी से कोरबा तक वैकल्पिक सडक़ की योजना पर काम होगा। पावर हाउस रोड में ट्रैफिक का दबाव कम करने वैकल्पिक सडक़ के लिए प्रयास किया जाएगा। सांसद ने कहा कि कोरबा का नया ट्रांसपोर्ट नगर जल्द बने इसके लिए भी प्रयास होगा क्योंकि हमारी कांग्रेस की सरकार ने इसका भूमि पूजन भी किया है। 1300 मेगावाट पावर प्लांट जल्द अस्तित्व में लाने, स्वीकृत नवीन कालेज बांकीमोंगरा, जटगा, उमरेली, रामपुर, आत्मानंद इंग्लिश मीडियम कालेज कोरबा को भवन उपलब्ध कराना, कोयला खदानों के कारण भू-विस्थापित व कामगारों की समस्याओं का निराकरण कराने पूरी गंभीरता से काम होगा। सांसद ने कहा कि कोरबा की जनता और मीडिया के साथ महंत परिवार का आत्मीय नाता है और सदैव बना रहेगा।

कोरबा सीट पर ज्योत्सना महंत का दबदबा कायम

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में भाजपा इस बार 11 में 10 सीट जितने में कामयाब रही है। कोरबा सीट पर अब भी कांग्रेस ने दबदबा भी कायम रखा है। यहां से कांग्रेस प्रत्याशी ज्योत्सना महंत ने 43 हजार 263 वोटों से दूसरी बार जीत दर्ज की है। कांग्रेस को 5 लाख 69 हजार 230 वोट मिले हैं। वहीं, भाजपा प्रत्याशी सरोज पांडेय को 5 लाख 25 हजार 967 वोट मिले हैं। कोरबा के आईटी कॉलेज में 4 जून को मतगणना हुई। 27 प्रत्याशियों के लिए 7 मई को 75.63त्न वोटिंग हुई। 3 लेयर में सुरक्षा के लिए मतगणना स्थल पर 500 जवानों की तैनाती की गई थी। कोरबा विधानसभा में 18 राउंड, रामपुर विधानसभा में 21 राउंड, पाली तानाखार विधानसभा में 22 राउंड, कटघोरा विधानसभा में 19 राउंड, जीपीएम में 18, एमसीबी में 12 राउंड और कोरिया बैकुंठपुर में 17 समेत कुल 142 राउंड में गिनती हुई।

संक्षिप्त समाचार

मिष्ठान्न व्यवसायी के घर चार लाख की चोरी

कोरबा(विश्व परिवार)। पसान क्षेत्र में चोरों ने मिष्ठान्न व्यवसायी गौरव गुप्ता के घर में सेंधमारी कर अपनी योजना को सफल किया। उन्होंने अंदर रखी अलमारी को उठाने के साथ काफी दूर ले गए। जहां उसे तोडक़र साढ़े तीन लाख रुपए नकदी रकम और सोने चांदी के जेवरातों की चोरी कर ली। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरु कर दी है। कोरबा में चोरों के हौंसले एक बार फिर से बुलंद हो चले है। जिले के सीमावर्ती क्षेत्र पसान स्थित गौरव गुप्ता के घर में सेंधमारी कर चोरी की एक बड़ी घटना को अंजाम दिया है। चोर किचन में सेंधमारी कर पहले भीतर घुसे फिर भारी-भरकम अलमारी को बाहर निकालकर कुछ दूर ले गए फिर उसे बड़े आराम तोड़ा और लॉकर में रखे साढ़े तीन लाख रुपए नकदी रकम,सोने चांदी के जेवरता ले उड़े। सुबह सुबह घटना की जानकारी होने पर पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस डॉग स्कॉड के साथ मौके पर पहुंची,लेकिन उससे भी कुछ खास सुराग हाथ नहीं लग सका। एफएसएल की टीम भी मौके पर पहुंची और कुछ साक्ष्य जुटाया। अज्ञात चोरों के खिलाफ अपराध कायम कर पुलिस द्वारा जांच की जा रही है।

स्कूलों एवं छात्रावास में रोपे गए पौधे

कोरबा(विश्व परिवार)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर केंदई रेंज में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां मोरगा स्थित मिशन स्कूल में पौधरोपण के साथ ही इसकी सुरक्षा का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में रेंजर अभिषेक दुबे व उनके स्टाफ के अलावा स्कूल की शिक्षक, शिक्षिकाएं, विद्यार्थी एवं आसपास के ग्रामीण उपस्थित थे। पसान वन परिक्षेत्र में आदिवासी बालक छात्रावास सिर्री में वन विभाग की ओर से पौधरोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें उपस्थित अतिथियों के अलावा लोगों में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में वनपाल ईश्वरदास मानिकपुरी, उनके स्टाफ तथा वन सुरक्षा समिति के सदस्यों ने अहम भूमिका निभाई। वन परिक्षेत्र पाली में रेंजय संजय लकड़ा के नेतृत्व में पौधरोपण किया गया।

मतगणना के दौरान शांति व्यवस्था बनाने चौक-चौराहों पर तैनात रहे जवान

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले में मतगणना के दौरान या चुनाव परिणाम आने के बाद मतगणना स्थल समेत शहर में किसी तरह की अप्रिय वारदात या शांति व्यवस्था प्रभावित न हो, इसके लिए कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश पर शहर के ट्रांसपोर्ट नगर चैक, सीएसईबी चैक, घंटाघर चैक, सुभाष चैक, कोसाबाड़ी चैक, पुराना बस स्टैंड सहित शहर के प्रमुख चैराहों व स्थानों पर पुलिस जवानों की ड्यूटी लगाई थी। पुलिस जवान सुबह से देर रात तक अपनी ड्यूटी पर तैनात रहे। इसी तरह पुलिस की करीब 20 पेट्रोलिंग टीम बनाई गई थी, जो मतगणना स्थल के आसपास सडक से लेकर शहर की सडकों व वार्डों में पेट्रोलिंग करते हुए निगरानी कर रही थी। मतगणना स्थल पर किसी तरह की अप्रिय वारदात होने पर नियंत्रण के लिए एडी स्कवाड, रस्सा पार्टी के साथ ही रिजर्व फोर्स रखी गयी थी।

घर से आलमारी ही उठाकर ले गये चोर,लाखो की चोरी

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा के पसान क्षेत्र में एक मिठाई व्यवसायी के घर चोरों ने हाथ साफ कर दिया। चोरों ने मिठाई व्यवसायी के घर से अलमारी को उठाकर अपने साथ ले गए और दूर ले जाकर उसे तोड़कर उसमें रखे नगदी रकम तथा सोने चांदी के जेवरात रखे हुए जेवरातों की चोरी कर ली। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पसान थाना पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार पसान क्षेत्र में रहने वाले मिठाई व्यवसायी गौरव गुप्ता मंगलवार देर रात खाना खाने के बाद पति-पत्नी बच्चे समेत उसकी बहन कमरे में सभी सोने चले गए। बुधवार सुबह उठकर देखा तो उनके एक कमरे का ताला टूटा हुआ था जिसमें रखी एक आलमारी गायब थी जिसमें लगभग साढ़े तीन लाख रूपये नगद तथा सोने-चांदी के जेवरात रखे हुए थे। व्यवसायी अपनी बहन की शादी की तैयारी में जुटा हुआ था, जिसके लिए वह सोना-चांदी की जेवरात खरीद कर रखा हुआ था। आस-पास देखने पर पता चला कि उनके घर से चोरी हुई आलमारी घर से ही कुछ दूरी पर पड़ी हुई है तथा उसमें रखे सोने चांदी के जेवर तथा नगदी गायब थे। जिसके बाद व्यवसायी ने इसकी सूचना थाने में दी। सूचना मिलने के बाद पुलिस डॉग स्कॉड के साथ मौके पर पहुंची, लेकिन कुछ खास सुराग हाथ नहीं लग सका। एफएसएल की टीम भी मौके पर पहुंची और कुछ साक्ष्य जुटाया। अज्ञात चोर के खिलाफमामला दर्ज कर पुलिस जांच कर रही है।

लोस चुनाव के नतीजे तानाशाही पर लोकतंत्र की जीत

सूखे पत्तों की तरह उड़ गया मोदी के 400 पार का नारा

महासमुंद(विश्व परिवार)। पूर्व संसदीय सचिव व महासमुंद के पूर्व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर ने कहा कि मोदी के अहंकार का जनता ने दमन कर दिया है। लोकसभा चुनाव के परिणामों को तानाशाही पर लोकतंत्र की जीत कहा जाना चाहिए। नरेंद्र मोदी का 400 पार का नारा सूखे पत्तों की तरह उड़ गया है। देश ने बता दिया कि जनता ही लोकतंत्र की रक्षक होती है। मोदी के चार सौ सीट जीतेंगे ही, इस अहंकार को देश की जनता ने कुचल दिया। श्री चंद्राकर ने कहा कि कांग्रेस व इंडिया गठबंधन ने मणिपुर, केरल, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, मेघालय, नागालैंड, पंजाब, राजस्थान सहित पूरे देश में अच्छा प्रदर्शन किया। जनता ने राहुल गांधी पर विश्वास जताया। छत्तीसगढ़ में जनादेश का सम्मान करते हुए कांग्रेस सदैव जनहित के लिए संघर्षरत रहेगी। उन्होंने कहा कि मोदी व अमित शाह की जोड़ी ने पूरे देश को जेल बना दिया। लोगों को स्वतंत्र रूप से बोलने और कार्य करने की भी स्वतंत्रता नहीं थी। उनके अनैतिक कार्यों का विरोध करने वाले दिल्ली, झारखंड के बहुमत वाले मुख्यमंत्रियों को जेल में डालने वाले मोदी-शाह ने भारतीय जनता पार्टी को वाशिंग मशीन बना दिया। भ्रष्ट नेताओं को भाजपा में लाकर 'आएगा तो मोदी ही' का नारा लगाने वालों को जनता ने जगह दिखा दी। श्री चंद्राकर ने कहा कि भाजपा को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। अब सहयोगी दलों के भरोसे मोदी की कुर्सी टिकी है। मोदी जो चार सौ पार के रथ पर सवार होना चाहते थे, वह सपना अधूरा रह गया। अब उन्हें टायर पंक्चर हुए रिक्शा में बैठकर घूमना पड़ेगा। यूपी में जहां मोदी राम मंदिर की राजनीति कर खुद को हिंदुओं के नए शंकराचार्य के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे, वहां मोदी और भाजपा को सबसे बड़ा झटका लगा है। सपा और कांग्रेस ने यूपी के 80 में से 40 सीटें जीतीं। अमेठी में स्मृति ईरानी राहुल गांधी के सामान्य कार्यकर्ता से हार गई। उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र ने मोदी के अहंकार को रोकने का काम किया। कॉंग्रेस ने विषम परिस्थितियों में भी संघर्ष किया। पार्टी के नेताओं को सरकारी एजेंसियों द्वारा परेशान किया गया, खाते सीज किए गए। लेकिन, फिर भी इंडिया गठबंधन के साथ मिलकर राहुल गांधी संविधान की रक्षा के लिए डटे रहे।

डेढ़ साल के बच्चे की गला दबाकर हत्या, आरोपी मां गिरफ्तार

रायगढ़(विश्व परिवार)। जिले के घरघोड़ा क्षेत्र में एक मां द्वारा अपने डेढ़ साल के मासूम बच्चे का गला दबाकर हत्या कर देने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। सूचना पर पुलिस ने आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार डायल-112 के माध्यम से घरघोड़ा राइनो को सूचना मिली कि ग्राम बरौनाकुण्डा जूनाडीह में एक महिला द्वारा अपने डेढ़ साल के बच्चे की गला दबाकर हत्या कर दी गई है। सूचना पर घरघोड़ा राइनो में कार्यरत आरक्षक दीपक खलखो द्वारा थाना प्रभारी घरघोड़ा को इसकी जानकारी दी और मौके पर पुलिस पहुंची। घटनास्थल पर पहुंची तो पता चला कि गांव की रहने वाली लक्ष्मी धोबी द्वारा दिनांक 04.06.2024 के रात्रि करीब सुबह 3.30 बजे अपने करीब डेढ साल के बच्चे आयुष का गला दबा कर हत्या कर दिया गया है। जिसके बाद पुलिस द्वारा शव एवं घटनास्थल का निरीक्षण, पंचनामा कार्यवाही पश्चात बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के लिये रवाना किया गया। तथा तत्काल आरोपी महिला को हिरासत में लेकर थाना लाया गया। तथा उसके खिलाफ धारा 174 सीआरपीसी से आरोपिया पर धारा 302 आईपीसी का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुछताछ में आरोपिया लक्ष्मी धोबी पति मधुकुमार धोबी उम्र 21 वर्ष सा. बरौनाकुण्डा जूनाडीह, थाना घरघोड़ा, जिला रायगढ़ ने बताया कि वह रात में घर के अंदर बच्चे के साथ सोयी थी, पति आंगन पर सोया था।

स्कूल से कंप्यूटर चोरी करने वाले दो नाबालिग गिरफ्तार

जांजगीर(विश्व परिवार)। शासकीय स्कूल से कंप्यूटर की चोरी करने वाले दो नाबालिग चोरों को पामगढ़ पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिनके कब्जे से कंप्यूटर बरामद किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार पामगढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मुड़पार (चु.) में प्राचार्य के पद पर पदस्थ अमृत भार्गव ने थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए बताया था। कि दिनांक 12.05.2024 को 11.00 बजे स्कूल बंद करके वो चले गए थे। जब वह दूसरे दिन स्कूल पहुंचे तो देखा कि स्कूल के मेन गेट से लगा साइड गेट का ताला टूटा हुआ था। स्कूल अंदर जाकर देखा तो कम्प्यूटर कक्ष का ताला टूटा हुआ था। कक्ष अंदर में रखा सीपीयू, मॉनिटर, की बोर्ड एवं माउस कीमती 80,000/ रुपये को कोई अज्ञात व्यक्ति द्वारा चोरी कर ले गया है। जिसकी जांच पुलिस कर रही थी। इसी बीच पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि कुछ युवक कम्प्यूटर बेचने ग्राहक की तलाश कर रहे है। जिसपर पुलिस ने मौके पर दबिश देकर दो नाबालिग लड़को को पकड़ा। पूछताछ के दौरान आरोपियों ने बताया की उन्होंने ही स्कूल में चोरी की घटना को अंजाम दिया था। जिनके पास से पुलिस ने 04 नग सीपीयू, 04 नग एलईडी मॉनिटर, 04 नग कीबोर्ड एवं 04 नग माउस बरामद किया। जिसकी अनुमानित कीमत 80 हजार बताई जा रही है। जिसकी खोजबीन पुलिस कर रही थी ।

विश्व पर्यावरण दिवस पर 25 हजार पौधों के रोपण के लक्ष्य के साथ अभियान की शुरूआत

आरएसएस के पर्यावरण गतिविधि विभाग के सरोकार

कोरबा(विश्व परिवार)। विश्व पर्यावरण दिवस पर सरकारी संगठनों के अलावा सामाजिक संस्थाओं ने भी आगे आकर पर्यावरण की रक्षा को लेकर जिम्मेदारी ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पर्यावरण गतिविधि विभाग ने इस मौके पर पौधारोपण अभियान की शुरुआत की। नगर निगम के वार्ड क्रमांक 15 ढोढ़ीपारा स्थित काली मंदिर क्षेत्र में इसका औपचारिक शुभारंभ किया गया। प्रारंभिक क्रम में आयोजकों के द्वारा यहां सीमित पौधे रोपे गए। क्षेत्र के लोगों की उपस्थिति में पर्यावरण के महत्व पर चर्चा हुई। लोगों को जागरूक किया गया कि देश और दुनिया में बन रहे पर्यावरण असंतुलन के हालात आने वाले भविष्य के लिए चेतावनी है इसलिए हम सभी को बढ़-चढकर अपने आसपास के पर्यावरण की सुरक्षा करनी होगी। इस काम को करने के लिए अधिक से अधिक पौधों का रोपण जरूरी है ताकि वे आने वाले समय में वृक्ष बनकर अपनी भूमिका निभाए। एसडीओ फारेस्ट के साथ-साथ पर्यावरण गतिविधि प्रमुख सेना के पूर्व कैप्टन मुकेश अधलखा ने पर्यावरण से संबंधित विषय पर सारगर्भित विचार रखे। पर्यावरण के समक्ष बनी हुई चुनौतियों के प्रति लोगों को सचेत किया और उनकी जिम्मेदारी बताई। बताया गया कि आज विशेष दिन पर अभियान की शुरुआत की जा रही है। मानसून के सक्रिय होने के साथ अलग-अलग स्तर पर लोगों को जोडकर ये पौधे उपलब्ध कराए जाएंगे और उनका रोपण कराया जाएगा। छायादार, फलदार और औषधि महत्व के पौधों पर हम विशेष ध्यान दे रहे हैं। ये पौधे हर दृष्टिकोण से उपयुक्त है और कुल मिलाकर मानव जाति का कल्याण करेंगे। उपस्थित लोगों ने अभियान की महत्ता स्वीकार किया और पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने की शपथ ली। इन सभी को पौधे स्मृति के तौर पर दिए गए। कार्यक्रम में कृष्णा प्रसाद सोनी, कैलाश नाहक, पूर्व पार्षद लक्ष्मण श्रीवास सहित क्षेत्र के जागरूक लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

जनता ने एक बार फिर भाजपा और पीएम मोदी पर जताया विश्वास : भावना बोहरा

कवर्धा(विश्व परिवार)। 4 जून को लोकसभा चुनाव के परिणाम के साथ ही देश में एनडीए गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिला है। वहीं दूसरी तरफ भाजपा इस चुनाव में 240 सीटों पर जीत दर्ज कर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। विधानसभा चुनाव में भी भाजपा ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए अरुणाचल प्रदेश और उड़ीसा में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है। इस दौरान पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने चुनाव परिणाम पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव में देश की जनता ने जो जनाधार दिया है उसमें एक बार पुन: एनडीए गठबंधन पर उन्होंने विश्वास जताया है। एनडीए गठबंधन की यह बड़ी जीत जनता के विश्वास और 10 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हुए विकास कार्यों का परिणाम है। जनता के इस जनादेश से एकतीसरी बार देश में फिर से मोदी सरकार जरुर बनेगी और एनडीए ने देश के विकास एवं जनहित की आकाँक्षाओं को पूरा करने के साथ ही विकसित भारत के लक्ष्य को जरुर पूरा करेगी। भावना बोहरा ने कहा कि छत्तीसगढ़ की जनता ने भी लोकसभा चुनाव में प्रदेश की 11 में से 10 सीटों पर बड़ी जीत दर्ज की है जिसके लिए मैं प्रदेश की जनता का आभार व्यक्त करती हूँ। पिछले छ: महीनों में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने अपने वादों को पूरा करते हुए प्रदेश के विकास एवं जनता के लिए जनहितैषी योजनाएं चलाई हैं जनता ने उसके प्रति अपना विश्वास जताते हुए छत्तीसगढ़ में भाजपा को लोकसभा चुनाव में बड़ी जीत दिलाई है। विधानसभा चुनाव की बात करें तो अरुणाचल प्रदेश में भी पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा सरकार बनने जा रही है वहीं उड़ीसा की जनता ने भी भाजपा की विकास नीति, ऐतिहासिक निर्णयों के प्रति भाजपा पर विश्वास जताते हुए ऐतिहासिक जीत दिलाई है।

बिजली कर्मचारी संघ महासंघ ने चलाया सदस्यता अभियान

कोरबा(विश्व परिवार)। भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध छत्तीसगढ़ बिजली कर्मचारी संघ महासंघ कोरबा वृत्त के सचिव एवं प्रदेश मंत्री यशवंत राठौर के नेतृत्व में प्रतिनिधियों द्वारा कोरबा जिले के सभी संभाग, उपसंभाग एवं वितरण केंद्रों में प्रवास कर सघन सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत बरपाली, सोहागपुर, रामपुर, करतला, भैसमा, कोरबा उपसंभाग, रजगामार, बालको, दर्री ग्रामीण एवं जोन, पाली, चैतमा, बांगो, तुलसी नगर, पाड़ीमार तथा उपसंभाग एवं संभागीय कार्यालय कटघोरा में दौरा कर सभी नियमित एवं अनियमित रूप से कार्य करने वाले बिजली कर्मियों को महासंघ के संगठनात्मक स्वरूप से अवगत कराते हुए अधिक से अधिक संख्या में जुडने हेतु जागरूक किया जा रहा है। इससे प्रभावित होकर अब तक लगभग 100 लोगों ने सदस्यता ग्रहण की है।कोरबा वृत्त से प्रतिनिधियों में सत्यप्रकाश गांधी गुप्ता, भुवनेश्वर साहू, अजय मिश्रा, सुनीता जायसवाल, गजेन्द्र कौशिक, सतीश साहू, देवानंद बढ़ई, छत्रपाल सिंह, मनीष सिंह, नरोत्तम धारी, संजय पटेल, सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, राघवेन्द्र साहू, शरद पटेल एवं संतोष साहू के द्वारा सदस्यता अभियान लगातार चलाया जा रहा हैं।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 07 जून 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

झुलसाती हवाओं का बढ़ता इलाका...

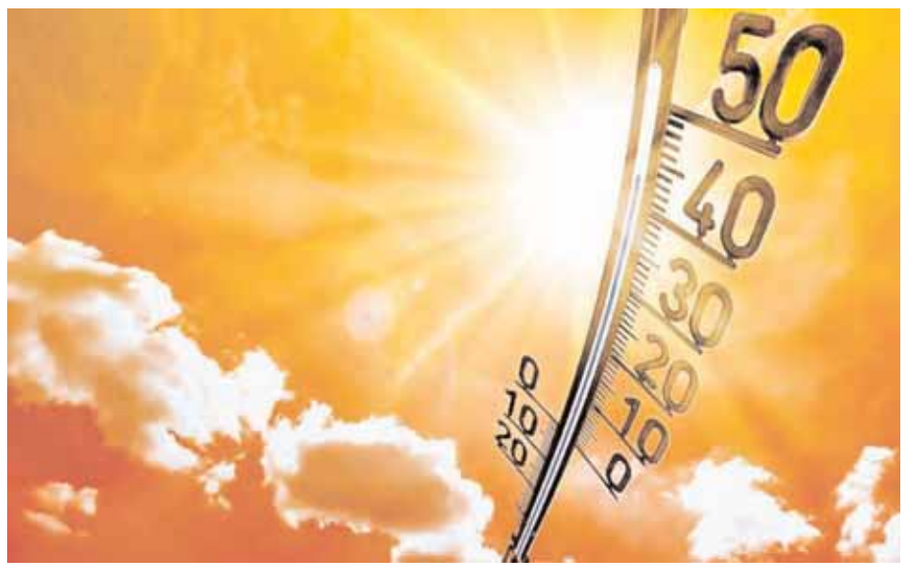

हर साल मई के आखिरी पखवाड़े से लेकर जून के अंत तक, जब तक मानसून गंगा के मैदानी इलाकों में नहीं आ जाता, उत्तर भारत में गरमी सामान्य मौसमी परिघटना है। इन दिनों दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, बिहार, झारखंड, बंगाल जैसे तमाम राज्य तपते रहते हैं। यह मानसून में तेजी लाने के लिए आवश्यक भी माना जाता है, क्योंकि गरमी जितनी तेज होती है, अरब सागर से उतना ही मजबूत मानसून भारत को भिगोता है। मगर अब जरूरत से अधिक गरमी पड़ने लगी है और तापमान 50 डिग्री के पार जाने लगा है। भारत के कई शहर तो पहले से अधिक गरम हो चले हैं। आखिर क्यों? दरअसल, इसकी बड़ी वजह जलवायु में लगातार हो रहा बदलाव है। जलवायु परिवर्तन के कारण अब हर मौसम पिछला रिकॉर्ड तोड़ता नजर आता है। इसी साल जनवरी पिछले वर्ष के जनवरी माह से अधिक गरम था। फरवरी, मार्च या अप्रैल महीने की भी यही कहानी रही। स्थिति यह है कि वैश्विक गरमी 1.2 डिग्री सेल्सियस तापमान की सीमा को पार कर चुकी है, जबकि समुद्र तटों के किनारे के देश साल 2100 तक वैश्विक गरमी को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक रोकने के हिमायती हैं। पेरिस समझौते में भी वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस कम करने पर सहमति बनी थी, लेकिन नतीजा अब भी सिफर ही दिख रहा है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) का कहना है कि जब तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होती है, तो हीट वेव की आवृत्ति (आने की दर), समय और प्रभाव में कम से कम दोगुना का इजाफा होता है। यही कारण है कि हाल के वर्षों में हीट वेव आने की दर बढ़ गई है। पहले झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र जैसे राज्य ही इसकी चपेट में आते थे, लेकिन अब तेलंगाना, उत्तरी कर्नाटक जैसे इलाके भी मार्च-अप्रैल से ही बेहिसाब गरमी झेलने को मजबूर हैं। सरकारों ने तो पहले से ही इससे लड़ने की तैयारियां शुरू कर दी थीं। बहरहाल, तापमान का बढ़ना और गरमी की तपन महसूस करना, दोनों अलग चीजे हैं। आपने खबरों में भी देखा होगा कि कहीं तापमान तो कम होता है, लेकिन गरमी अधिक महसूस होती है। यह काफी हद तक नमी पर निर्भर करता है। यदि वातावरण में नमी कम हो, तो शुष्क, यानी सूखी गरमी पड़ती है, जिसमें कूलर, पंखा आदि से राहत मिल जाती है। मगर जब तापमान के साथ नमी भी होती है, तो हमारे शरीर से काफी ज्यादा पसीना निकलने लगता है और 35-36 डिग्री सेल्सियस तापमान भी 40 डिग्री के समान महसूस होने लगता है। ऐसी उमस में एयर कंडिशनर ही कारगर साबित होता है। उल्लेखनीय है कि तापमान मापने का तरीका बिल्कुल सामान्य है। शहर की कुछ जगहों पर इसकी मशीनें लगाई जाती हैं, जिनमें थर्मामीटर की तरह तापमान मापने वाला यंत्र होता है। वही हवा की गति भी माप लेता है। अभी विशेषकर उत्तर भारत में तापमान में जो उछाल दिखने को मिल रहा है, उसमें जल्द ही कुछ राहत मिल सकती है। अगले तीन-चार दिनों में जम्मू-कश्मीर में पश्चिमी विक्षोभ आ सकता है। दिल्ली-एनसीआर के कुछ इलाकों में तो बुधवार की शाम हल्की बारिश भी हुई। इस विक्षोभ से राजस्थान को छोड़कर शेष मैदानी इलाकों में कुछ राहत मिल सकती है। हालांकि, इसका असर भी तीन-चार दिनों तक ही रहेगा, फिर सूरज पहले की तरह आग बरसाने लगेगा। यह स्थिति कमोबेश मानसून आने तक बनी रहेगी। बढ़ती गरमी मानव स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचाती है। जिस तरह 98.5 फारेनहाइट तापमान के बाद शरीर में हलचल तेज हो जाती है, उसी तरह 37 डिग्री से अधिक का तापमान शरीर को बेचैन कर सकता है। इसके बाद मुख्यत: बेहतर प्रतिरोधक क्षमता ही गरमी का मुकाबला करती है। चूंकि बच्चे और बुजुर्गों में यह क्षमता कम होती है, इसलिए उनके साथ-साथ उन लोगों को भी सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है, जो पहले से बीमार होते हैं। हालांकि, सावधानी सामान्य आदमी को भी रखनी चाहिए, क्योंकि जब तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जाता है, तो शरीर में पानी घटने लगता है और शारीरिक क्षमता घटकर आधी रह जाती है। यही कारण है कि गरमी के महीने में पानी अधिकाधिक पीने और मौसमी फ्लों का सेवन करने को कहा जाता है। नारियल, खीरा, तरबूज, ककड़ी, खरबूजा जैसे फ्ल शरीर में पानी की कमी को पूरा करने में सक्षम होते हैं। एक यह सावधानी भी बरतने को कहा जाता है कि सुबह 11 बजे से लेकर शाम चार बजे तक धूप के 'एक्सपोजर' से बचना चाहिए। महानगरों व बड़े शहरों में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) तमाम तरह के दिशा-निर्देश लागू करता है। जैसे, इस बार अस्पतालों को अपने 100 बेड लू के शिकार लोगों के लिए खाली रखने के निर्देश दिए जा चुके हैं। बच्चों के वार्ड अस्पताल के शीर्ष तल पर न रखने के निर्देश भी हैं, क्योंकि तेलंगाना में 2017 में कई नवजातों की हुई मौत के बाद अध्ययन में यही बात सामने आई थी कि संबंधित अस्पतालों ने नवजातों को शीर्ष तल पर रखा था, जहां गरमी तुलनात्मक रूप से अधिक थी। इसी तरह, खुले में काम करने वाले श्रमिकों, निर्माण-कारीगरों, निगम कर्मचारी, सफाईकर्मियों, कूड़ा बीनने वालों आदि को अपना काम सुबह 10 बजे तक खत्म कर लेना चाहिए और 11 बजे से चार बजे तक खुले में काम करने से बचना चाहिए। उन कंपनियों में भी दिन में छुट्टी देने की व्यवस्था की जाती है, जहां की छत गरमी से बचने के लिए नाकाफी मानी जाती है। सवाल है कि आखिर इस बढ़ते तापमान को रोकें कैसे? इसका एक समाधान वृक्षारोपण है। इसके लिए सरकारों को आगे आना होगा। शहर में जहां हरियाली है, वहां उसे बढ़ाने की व्यवस्था करनी होगी। पार्क में वृक्षों की सघनता बढ़ानी होगी और उनकी कटाई रोकनी होगी। तापमान कम करने के लिए पार्कों के अंदर की झीलों के आसपास भी हरियाली बढ़ानी चाहिए। बेंगलुरु, हैदराबाद में तो तापमान को नियंत्रित करने के लिए रिसाइकिल वाटर, यानी दूषित जल को इस्तेमाल के लायक बनाकर पार्कों में इस्तेमाल किया जा रहा है। जाहिर है, इस तरह के प्रयास तमाम जगहों पर करने होंगे। एक समग्र रणनीति ही बढ़ते तापमान की तपिश से हमारी सुरक्षा कर सकती है।

सबकी नजरें सजा पर टिकी

ऐतिहासिक फैसले में न्यूयॉर्क की अदालत ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को हश मनी मामले में दोषी करार दिया। पहली बार है, जब किसी पूर्व या मौजूदा राष्ट्रपति को दोषी करार दिया गया। वह भी 34 मामलों में। ट्रंप को 11 जुलाई को सजा सुनाई जाएगी। उन्हें जेल जाना पड़ सकता है। ट्रंप ने इस फैसले को अपमानजनक कहा और अध्यक्षता करने वाले जज को भ्रष्ट बताया। वे इसके खिलाफ अपील करेंगे। ट्रंप पर आरोप है कि 2016 में उन्होंने स्कैंडल से बचने के लिए पोर्न फिल्म स्टार को मुंह बंद रखने को कानूनी खर्च के तौर पर गुप्त रूप से मोटी रकम चुकाई थी जो उनके विवाहेतर संबंधों की कहानी अखबार को बेचने की बात कर रही थी। विशेषज्ञों के अनुसार जिन मामलों में पूर्व राष्ट्रपति दोषी ठहराए गए हैं, उनमें जेल की सजा की संभावनाएं बहुत कम हैं, बल्कि मोटा जुर्माना लगने की संभावना अधिक है। यह भी किउन्हें घर पर नजरबंद रखा जा सकता है। अमेरिकी संविधान के मुताबिक जेल होने पर भी ट्रंप की उम्मीदवारी को आंच नहीं आ सकती। उनकी पार्टी ने व्हाइट हाउस की दौड़ में शामिल ट्रंप पर अपना भरोसा भी जताया है जबकि अभी औपचारिक रूप से राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार घोषित किया जाना बाकी है। पार्टी के आधे से अधिक पदाधिकारियों का उन्हें पहले से समर्थन प्राप्त है। कहा जा रहा है, उनमें से कुछ के इस फैसले से प्रभावित होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। मैनहट्टन डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी के दफ्तर द्वारा जब ट्रंप पर लगे आरोपों को घोर अपराध की श्रेणी में शामिल किया गया था तभी उनके विरोधियों को भरोसा हो गया था कि वे चुनाव से पहले मुसीबतों में घिर सकते हैं। उन्होंने इसे कानूनी मानने की बाजाय राजनीतिक एक्सरसाइज करार दिया। पहले से ही माना जा रहा है कि सारी कवायद चुनाव को लेकर ही चल रही है। व्यवसायी होने के बावजूद ट्रंप सधे हुए राजनीतिज्ञ साबित हुए हैं। विरोधियों को टक्कर देने के मामले में पूरा दम-खम लगाने से नहीं चूकते। उन्हें युवाओं और जोशीले लोगों का समर्थन रहा है जिनके बारे में आकलन है कि वे अपने नेता के प्रति समर्पित बने रहने में कोताही नहीं करेंगे। हालांकि सबकी नजरें अब सजा पर टिकी हैं, जो अमेरिकी इतिहास ही नहीं, दुनिया भर के राजनीतिज्ञों के लिए ऐतिहासिक साबित हो सकती है।

विशेष लेख

विवाद और बवंडर का विषय बना....

प्रधानमंत्री नरेन्द्र प्रधानमंत्री का कन्याकुमारी के विवेकानंद शिला स्मारक में ध्यान करना जितने बड़े विवाद और बवंडर का विषय बना उसे बिल्कुल स्वाभाविक नहीं माना जा सकता। भारत सहित विश्व समुदाय को प्रेरणा देने वाले विवेकानंद के ध्यान स्थल से जुड़े इस केंद्र पर प्रधानमंत्री जाकर ध्यान करते हैं तो इसका संदेश सर्वत्र जाता है और लोगों में भी विवेकानंद के जैसा बनने, विपरीत परिस्थिति में ध्यान करने और स्वयं को नियंत्रित कर देश के लिए काम करने की प्रेरणा मिलती है। विपक्ष ने यद्यपि बुद्धिमत्तापूर्वक कहा कि वे ध्यान साधना का विरोध नहीं कर रहे, क्योंकि उन्हें लगता था कि ऐसा करने से भाजपा को चुनावी लाभ हो जाएगा। इसलिए इसके टीवी कवरेज पर आपत्ति व्यक्त की गई। अलग- अलग पार्टियां चुनाव आयोग के पास गई भी। प्रधानमंत्री या कोई नेता चुनाव प्रचार के बाद या बीच में किसी धर्मस्थल या प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल पर जाएं, वहां पूजा, प्रार्थना, ध्यान या अन्य साधना करें उस पर चुनाव आयोग या कोई भी संवैधानिक संस्था कैसे रोक लगा सकती है? विपक्ष के नेताओं ने भी पूरे चुनाव में परिश्रम किया है और उन्हें भी ध्यान साधना और शारीरिक, मानसिक संतुलन व शांति के लिए पहले से ऐसी कुछ योजना बनानी चाहिए थी। भारत में अनेक ऐसे धार्मिक साधना स्थल हैं जहां जाकर आप शारीरिक-मानसिक थकान से आध्यात्मिक कृतियों के द्वारा मुक्ति पा सकते हैं। ऐसी जगह भी है जहां जाकर एक दो दिनों के विश्राम से आपको विशेष शांति और शक्ति मिलती है। अगर विपक्ष के नेताओं में ऐसी दृष्टि नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि प्रधानमंत्री या कोई भी सत्तारूढ़ पार्टी का नेता उस दिशा में न सोचें न करें। राहुल गांधी, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, प्रियंका वाड्रा, अरविंद केजरीवाल, उद्धव ठाकरे, शरद पवार सभी चाहें तो कहीं न कहीं ऐसी साधना कर सकते थे और उन्हें भी टेलीविजन या मीडिया का कवरेज मिलता। नेताओं में वाकई ध्यान और साधना की प्रतिस्पर्धा हो तो यह देश और संपूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी होगा। जब आध्यात्मिक दृष्टि से आपके शरीर और मन के बीच संतुलन स्थापित होता है तो उसके साथ सकारात्मक दृष्टि भी विकसित होती है जहां से केवल सबके कल्याण के भाव से ही विचार पैदा हो सकते हैं। जब 2014 का चुनाव प्रचार समाप्त हुआ तब नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे। उन्होंने शिवाजी के रायगढ़ किले में जाकर ध्यान किया था। शिवाजी हमारे देश में भारतीय संस्कृति और हिंदुत्व की दृष्टि से प्रेरक और आदर्श व्यक्तित्व हैं। शिवाजी जैसे महापुरु ष के प्रति अगर विपक्ष के अंदर ऐसा भाव पैदा नहीं होता तो इसके लिए वही दोषी हैं। 2019 के चुनाव प्रचार की समाप्ति के बाद प्रधानमंत्री उत्तराखंड के केदारनाथ गए थे और वहां उन्होंने गुफा में ध्यान और साधना की। यह मान लेना कि इस प्रकार की ध्यान साधना या पूजा पाठ के मीडिया कवरेज के प्रभाव में आकर पहले से किसी और को मत देने का मन बनाए मतदाता अचानक पलट कर भाजपा को वोट देने लगेंगे उचित नहीं लगता। मतदाताओं के पास भी सही गलत का निर्णय करने का विवेक है। विपक्ष इसे प्रधानमंत्री मोदी के मतदाताओं को आकर्षित करने की रणनीति मानता था तो उसे भी इसकी काट में रणनीति अपनानी चाहिए। विरोधियों ने प्रधानमंत्री की ध्यान साधना को राजनीतिक मुद्दा बना दिया। किसी भी देश का शीर्ष ध्यान साधना या अपने आध्यात्मिक कर्मकांड या फिर छुट्टियां मनाने जाएगा तो उसे मीडिया का कवरेज मिलेगा। यह भी सच है कि प्रधानमंत्री को जितना कवरेज मिलेगा उतना किसी अन्य नेता को नहीं मिल सकता, लेकिन दूसरे नेता अपना कार्यक्रम इतने ही प्रेरणादायी व सकारात्मक बनाएं तो मीडिया उन्हें नजरअंदाज नहीं कर सकता। वैसे भी विरोधियों ने प्रधानमंत्री मोदी को खलनायक साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उत्तर प्रदेश में जब से योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बने हैं उनके प्रति भी विरोधियों का रवैया यही है। स्वयं प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले केवल मोदी बोलते थे अब उसमें योगी को जोड़ दिया। योगी समर्थक यह बोलते हैं कि विरोधियों को उनके भगवा वस्त्र से, अपराधियों के विरु द्ध कार्रवाई से या हिंदुत्व के प्रति प्रखरता से समस्या है तो इसका जवाब उनके पास नहीं होता। विवेकानंद शिला स्मारक पर जाने वाले या उसकी प्रशंसा करने वाले ज्यादातर नेताओं को शायद यह पता नहीं होगा कि उसके निर्माण के पीछे भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मुख्य भूमिका थी। 1963 में स्वामी विवेकानंद के जन्म शताब्दी के समय लोगों ने उस चट्टान के पास एक स्मारक बनाने का निश्चय किया लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली।

मुस्लिम साझेदारी सुधारने का सवाल

हिलाल अहमद

अठारहवें लोकसभा चुनाव में मुस्लिम उम्मीदवारों की संख्या में गौरतलब गिरावट भारतीय चुनावी राजनीति की दो दिलचस्प दिशाओं को रेखांकित करती है। अव्वल तो यही लगता है कि सियासी दल वास्तव में पेशेवर हो गए हैं। उन्होंने जीतने की क्षमता को ही प्रत्याशी चयन का पैमाना बना लिया है। दलों की टिकट वितरण व्यवस्था अब किसी वैचारिक प्रतिबद्धता से निर्देशित नहीं होती है। इसके बजाय, जाति, धर्म को ज्यादा महत्व दिया जाता है। सिर्फ राजनीतिक साख के लिए किसी मुस्लिम को टिकट देना अब व्यावहारिक रूप से कठिन हो गया है। दूसरी, राजनीति के प्रमुख आख्यान के रूप में हिंदुत्व-संचालित राष्ट्रवाद के उद्भव ने गैर-भाजपा दलों पर भी असर डाला है। ये दल खासकर राजनीतिक सदर्भों में महज मुस्लिम पहचान या छवि से बचने लगे हैं। भाजपा अपने अब तक के प्रयासों से यह धारणा बनाने में सफल रही है कि अतीत में विपक्षी दलों ने मुसलमानों का तुष्टीकरण किया है और इससे हिंदू हित कमजोर हुआ है। कोई भी पार्टी नहीं चाहेगी कि वह सिर्फ मुस्लिम समर्थक के रूप में पहचानी जाए। वैसे, आज के भारत में मुसलमानों के सियासी हाशिये पर होने का जवाब तलाशते हुए उनकी समाजशास्त्रीय विविधता के साथ-साथ कानूनी-सांविधानिक ढांचे पर भी हमें ध्यान देना चाहिए। एक समय था, जब जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में उत्तर-औपनिवेशिक सरकार इस मोर्चे पर स्पष्ट थी। वह मुसलमानों को सांविधानिक अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता देने और उनकी रक्षा करते हुए सांप्रदायिक राजनीति से छुटकारा पाने की इच्छुक थी। सांप्रदायिक राजनीति की वजह से ही देश विभाजित हुआ था। इस परस्पर विरोधी लगने वाले मुद्दे से निपटने के लिए एक अलिखित मानदंड बनाया गया था। नागरिकों के एक समूह को 'मतदाता' के रूप में देखते हुए प्रतिनिधित्व की धर्मनिरपेक्ष अवधारणा बनाई गई थी। वैसे, जन-प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 साफ कहता है कि धर्म को चुनावी प्रक्रियाओं से अलग रखना चाहिए। असंख्य मतदाताओं की धर्मनिरपेक्ष सोच ने कम से कम सैद्धांतिक रूप से एक संभावना पैदा की कि मुस्लिम मतदाता सिर्फ मुस्लिम उम्मीदवारों को वोट नहीं करेंगे। दूसरे शब्दों में कहें, तो नेहरूवादी सरकार ने निर्वाचित निकायों में पृथक मुस्लिम प्रतिनिधित्व को दृढ़ता से हतोत्साहित किया था। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं कि सामूहिक मुस्लिम हितों की अनदेखी की गई। धर्मनिरपेक्ष भारत में मुस्लिम भागीदारी के लिए दो महत्वपूर्ण तंत्र अपनाए गए। सबसे पहले, राज्यसभा और राज्य विधान परिषदों से मुस्लिम नेताओं को लाने का तरीका आजमाया गया। बाद में भारतीय जनसंघ और भाजपा भी अपने मुस्लिम नेताओं को राज्यसभा के रास्ते ही आगे लेकर आई। दूसरा, धर्मनिरपेक्ष भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न पहलू के रूप में मुस्लिम उपस्थिति की सराहना की गई। संविधान में अल्पसंख्यक को दिए गए अधिकारों के प्रावधान के साथ यह अच्छा हुआ। सरकारों ने भी देश के धर्मनिरपेक्ष लोकाचार को दर्शाने के लिए मुस्लिम तहजीब और विरासत को सामने पेश किया। निर्वाचित निकायों में अलग मुस्लिम प्रतिनिधित्व से इनकार और सार्वजनिक जीवन में सकारात्मक मुस्लिम उपस्थिति के बीच का समीकरण बहुत नाजुक था। सियासी दल चुनावी गणना से निर्देशित होते थे। ऐसे में, जरूरी था कि वे चुनावी मुद्दे के रूप में मुस्लिम हितों को सामने लाएं। नेहरू के निधन के ठीक बाद यही हुआ। इंदिरा गांधी ने धर्म की एक नई राजनीति शुरू की, जिसने मुस्लिम प्रतिनिधित्व और मुस्लिम भागीदारी के बीच संतुलन की पूरी तरह उपेक्षा की। वास्तव में, 2006 में सच्चर आयोग की रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद मुस्लिम प्रतिनिधित्व पर बहस को नवजीवन मिला। मुस्लिमों की उपेक्षा और पिछड़ापन नीतिगत मुद्दों के रूप में उभरे, जबकि सामाजिक समावेशन का खाका चुनावी राजनीति का मार्गदर्शक सिद्धांत था। मुस्लिम भागीदारी और मुस्लिम प्रतिनिधित्व के मिश्रण ने यह धारणा बनाई कि सांविधानिक धर्मनिरपेक्षता एक अलग मुस्लिम सियासी पहचान की रक्षा से संबंधित है। इस अस्पष्ट स्थिति ने हिंदुत्व की राजनीति की इस दलील को मजबूत किया कि मुस्लिम पिछड़ेपन व भागीदारी पर कोई चर्चा अलगाववाद को ही जन्म देगी। 2024 में भाजपा का चुनावी अभियान स्पष्ट रूप से इसी तर्क की अभिव्यक्ति है। अब सवाल उठता है : हमें मुस्लिम राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बारे में कैसे बात करनी चाहिए, खासकर अब जब मुस्लिम पहचान गैर-भाजपा दलों के लिए भी राजनीतिक समस्या बन गई है? मैं इससे निपटने के लिए एक प्रस्ताव करता हूं। सबसे पहले, प्रतिनिधित्व के विचार को ही लोकतांत्रिक बनाने की जरूरत है। मुस्लिम प्रतिनिधित्व पर किसी भी चर्चा में मुस्लिम दलितों, मुस्लिम महिलाओं और गरीब मुसलमानों की चिंताओं को स्वीकार किया जाना चाहिए। इसमें पसमांदा राजनीति का योगदान बहुत खास है। दूसरा, व्यापक संस्थागत व्यवस्था का लोकतंत्रीकरण। हमें मुस्लिम प्रतिनिधित्व का मूल्यांकन करने के लिए सिर्फ संसद और विधानसभाओं को ही नहीं देखना चाहिए। इसके बजाय हमें राजनीतिक दलों के समावेशी चरित्र और उनकी आंतरिक संरचना का आकलन करना चाहिए।

अग्निशमन सेवा को सर्वश्रेष्ठ बना देंगे....

चिंतामणि पाणिग्रही

महोदय, माननीय मित्रों का, जिन्होंने इस वाद-विवाद में भाग लिया है, बहुत आभारी हूं। ...कुल मिलाकर, 16 माननीय सदस्यों ने इस वाद-विवाद में भाग लिया है...। कहा गया कि पहले ही दिन मैं आग से खेल रहा हूं, परंतु महोदय, मैं आशा करता हूं कि माननीय सदस्यों की सद्भावनाओं तथा मनोबल द्वारा हम न केवल आग को नियंत्रित कर पाएंगे, अपितु आग बुझा भी सकेंगे। यहां माननीय सदस्यों द्वारा कुछ सवाल उठाए गए हैं। मैं उन सभी को यथासंभव स्पष्ट करूंगा। ...मैंने पूछताछ की है कि दिल्ली में नगरपालिका के सभी चार निकायों के पास पर्याप्त धनराशि है और जितनी भी धनराशि की मुख्य अग्निशमन अधिकारी को जरूरत होती है, यह उसे उपलब्ध कराई जाएगी...। यह विधेयक केवल दिल्ली तक ही सीमित है, क्योंकि इस प्रकार की दुर्घटनाएं दिल्ली में होती हैं और माननीय सदस्य स्वयं यह बात एकदम चाहते हैं कि इस प्रकार का एक विधेयक आना चाहिए, ताकि हम हो रही दुर्घटनाओं के मामले में सहायता कर सकें। महोदय, दूसरी बात, जिसका यहां जिक्र किया गया है, यह विलंब के बारे में है। ...महोदय, जैसा आप जानते हैं, हमें एक प्रणाली विरासत में मिली है, जहां आप किसी भी बात के लिए एकदम 'हां' या 'नहीं' कह सकते हैं। एक माननीय सदस्य ने सुझाव दिया है कि मालिकों को तंग न किया जाए, यह भी इसका एक पहलू है तथा यहां इसका मतलब तंग न करने से है और उन्हें अपील करने का अवसर मिलना चाहिए।... वर्तमान प्रणाली में हम उन्हें न तो अभी तंग कर सकते हैं और न ही किसी अन्य समय तंग कर सकते हैं। हम यह शर्त नहीं रख सकते कि ये अपीलें निर्धारित समय सीमा में निपटाई जाएं, यद्यपि हम चाहते हैं कि अपीलें शीघ्रता से निपटाई जाएं। ये सभी बातें वर्षों

से चली आ रही हैं। इसलिए मैं आशा करता हूं कि आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि अर्धस्थायी न्यायिक निकायों द्वारा भी मामलों के निपटान हेतु कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई है।...सिद्धार्थ होटल के बारे में मैंने इंद्रजीत गुप्त का भाषण सुना है। ...उनके सुझावों को हमेशा गंभीरता से लिया जाता है, लेकिन वे किसी काम के नहीं हैं। हमने इस होटल के संबंध में उनके सुझावों को नोट किया है, दिल्ली प्रशासन द्वारा न्यायाधीश खन्ना की अध्यक्षता में घटना की जांच करने के लिए आयोग का गठन किया गया है। ...हम इस पर चर्चा कर सकते हैं। जहां तक मुआवजा देने का संबंध है, यह होटल की निजी देनदारी है, क्योंकि यह एक गैर-सरकारी होटल है। जहां तक दावा आयोग का गठन करने की बात है, इस सुझाव पर विचार किया जा सकता है। हम एक दावा आयोग गठित कर सकते हैं तथा इंद्रजीत गुप्त ने जैसा सुझाव दिया है, इन बातों पर गहराई से विचार किया जा सकता है।... एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा संसद भवन में आग से रक्षा के उपाय करने के बारे में है। जब मैं प्राक्कलन समिति का अध्यक्ष था, तो हमने संसद भवन के रखरखाव के बारे में सोचा था, समिति के माननीय सदस्यों ने आग से रक्षा के उपायों में कुछ कमियां पाईं, तब केंद्रीय लोक निर्माण विभाग ने इन्हें दूर किया तथा वे अब सतर्क हैं। जहां तक आग से रक्षा का संबंध है, नार्थ ब्लॉक में नजदीक ही एक अग्निशमन केंद्र है। ...लगभग एक माह पहले केवल यह देखने के लिए कि क्या संसद भवन में आग बुझाने की व्यवस्थाएं पर्याप्त हैं, वहां अभ्यास के रूप में परीक्षण किया गया था।... वर्तमान प्रणाली में हम उन्हें न तो अभी तंग कर सकते हैं और न ही किसी अन्य समय तंग कर सकते हैं। हम यह शर्त नहीं रख सकते कि ये अपीलें निर्धारित समय सीमा में निपटाई जाएं, यद्यपि हम चाहते हैं कि अपीलें शीघ्रता से निपटाई जाएं। ये सभी बातें वर्षों से चली आ रही हैं। इसलिए मैं आशा करता हूं कि आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि अर्धस्थायी न्यायिक निकायों द्वारा भी मामलों के निपटान हेतु कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई है।...सिद्धार्थ होटल के बारे में मैंने इंद्रजीत गुप्त का भाषण सुना है। ...उनके सुझावों को हमेशा गंभीरता से लिया जाता है, लेकिन वे किसी काम के नहीं हैं। हमने इस होटल के संबंध में उनके सुझावों को नोट किया है, दिल्ली प्रशासन द्वारा न्यायाधीश खन्ना की अध्यक्षता में घटना की जांच करने के लिए आयोग का गठन किया गया है। ...हम इस पर चर्चा कर सकते हैं। यह विधेयक केवल दिल्ली तक ही सीमित है, क्योंकि इस प्रकार की दुर्घटनाएं दिल्ली में होती हैं और माननीय सदस्य स्वयं यह बात एकदम चाहते हैं कि इस प्रकार का एक विधेयक आना चाहिए, ताकि हम हो रही दुर्घटनाओं के मामले में सहायता कर सकें। महोदय, दूसरी बात, जिसका यहां जिक्र किया गया है, यह विलंब के बारे में है। ...महोदय, जैसा आप जानते हैं, हमें एक प्रणाली विरासत में मिली है, जहां आप किसी भी बात के लिए एकदम 'हां' या 'नहीं' कह सकते हैं। एक माननीय सदस्य ने सुझाव दिया है कि मालिकों को तंग न किया जाए, यह भी इसका एक पहलू है तथा यहां इसका मतलब तंग न करने से है और उन्हें अपील करने का अवसर मिलना चाहिए।... वर्तमान प्रणाली में हम उन्हें न तो अभी तंग कर सकते हैं और न ही किसी अन्य समय तंग कर सकते हैं। हम यह शर्त नहीं रख सकते कि ये अपीलें निर्धारित समय सीमा में निपटाई जाएं, यद्यपि हम चाहते हैं कि अपीलें शीघ्रता से निपटाई जाएं। जैसा कि माननीय सदस्यों ने भी सुझाव दिया है, हमें यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए। कि दिल्ली अग्निशमन सेवा एक अत्यन्त कुशल अग्निशमन सेवा बन जाए, क्योंकि यह भारत की राजधानी में है। .. और देश की दूसरी राजधानियों वाले शहरों में इसका अनुसरण किया जाए।

प्रभू की मूरत से मिलती जीवन में शान्ति की प्रेरणा : आर्यिका सृष्टिभूषण माताजी

भगवान शान्तिनाथ के कल्याणक महोत्सव पर जैन मंदिरों में भक्तों ने चढ़ाया निर्वाण लाडू

ललितपुर (विश्व परिवार)। प्रभु की मूरत जीवन में शान्ति की प्रेरणा देती है जिसको देखकर जव प्रभु का स्मरण करोगे। जीवन में ऐसा परिवर्तन आएगा जिससे भविष्य तो सुधरेगा ही साथ ही परिणामों में निर्मलता आएगी।

उक्त विचार जिनधर्म प्रभाविका आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी ने व्यक्त कर श्रावकों को प्रभु के कल्याणक पर जीवन में कुछ न कुछ ऐसा संकल्प लेने को प्रेरित किया जिससे आत्मिक शान्ति की अनुभूति होगी।

मुख्य आयोजन नगर के चन्द्रप्रभु जिनालय डोढ़ाघाट पर जिनधर्म प्रभाविका आर्यिका रत्न सृष्टिभूषण माता जी आर्यिका विजज्ञास्सा श्री माता जी एवं आर्यिका विश्वयश श्री माता जी सानिध्य में भगवान शान्तिनाथ का जन्म तप एवं मोक्ष कल्याणक उत्साह के साथ मनाया प्रात:काल अभिषेक शान्तिधारा के उपरान्त सामूहिक पूजन एवं निर्वाण लाडू भी भक्तों ने चढ़ाया। प्रभु की आरती पालना झूला का सौभाग्य पुणर्याजक परिवार द्वारा किया गया। प्रतिष्ठाचार्य पं. संतोष जैन अमृत ने धार्मिक क्रियाओं को विधिविधान पूर्वक सम्पन्न कराया। इस मौके पर प्रमुख रूप से जैन पंचायत के अध्यक्ष डॉ. अक्षय टडैया महामंत्री आकाश जैन, प्रबंधक वीरचंद सर्राफ, प्रभात लागौन, अक्षय अलया, मनोज जैन बबीना, पारस मनया, अमित सर्राफ, अनिल जैन, अभय जैन आदि मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त नगर के जैन मंदिरों में प्रभुअभिषेक शान्तिधारा कर भक्तों ने निर्वाण लाडू च-सजयाया और सामूहिक पूजन की।

नगर के सतोदय तीर्थ सेरोन में भगवान शान्तिनाथ के तीनों कल्याणक प्रतिष्ठाचार्य पं. जयकुमार जैन ने विधिविधान पूर्वक सम्पन्न कराए अभिषेक शान्तिधारा के उपरान्त निर्वाण लाडू च-सजयाया गया। संगीतकार राजेश जैन ने प्रभु की आरती भक्तिपूर्वक सम्पन्न कराई जिसमें भक्त-हजयूम उठे। कार्यक्रम के उपरान्त सेरोन जी के पूर्व अध्यक्ष हीलाल जैन खजुरिया दादा के देहपरिवर्तन पर अध्यक्ष सतीश जेन वंटी, मनोज जैन बबीना, विजय जैन लागौन अजय जैन ने अपने विचार व्यक्त कर क्षेत्र के विकास में उनके योगदान को अविस्मरणीय बताया और उनकी स्मृति में प्रतिवर्श दादा के नाम पर एक पुरूष्कार संचालित शान्तिनाथ इण्टर कालेज के प्रतिभावान विद्यार्थी को देने का संकल्प लिया। इस मौके पर प्रमुख रूप् से अनिल जैन अीाय जैन सुमेरचंद अतुली कुमार जैनमनीश जेन मंगू, आलोक जैन आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे। -**अक्षय अलया**

आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने कहा- जिससे मृत्यु की मृत्यु हो जाये ऐसी मृत्यु ही समाधिमरण है, अभिनव

कुण्डलपुर/ दमोह (विश्व परिवार)। जिस मृत्यु से मृत्यु की मृत्यु हो जाये वही मृत्यु समाधिमरण है, अभिनव आचार्य श्री समयसागर महाराज ने आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के समाधिमरण दिवस पर आयोजित धर्मसभा में जनसभा को संबोधित करते हुए मृत्यु और मुक्ति और मृत्यु से मुक्ति के गहन ज्ञान से, श्रोताओं को सरल व्याख्या करते हुए बोध कराया।

मध्यप्रदेश के दमोह जिला के सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर में आचार्य श्री समयसागर महाराज ने समझाया कि महापुरुषों के शब्द का अर्थ ज्ञात न भी हो तो उनके शब्दों की तरंगें शुद्धि में उपयोगी होती हैं।बाल्यकाल में हमने आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज की वाणी का श्रवण किया, हम अल्पायु में थे अर्थ नहीं समझते थे। आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज मारवाड़ी भाषा में प्रवचन देते थे और हमें मारवाड़ी तो क्या हिंदी भाषा का भी ज्ञान न था।मगर उनके शब्द कानों के मार्ग से होते हुए अंतरंग तक पहुंच गये। हमें नवकार मंत्र का पाठ तत्समय में हमारे अग्र भ्राता जो कि संसार में संत शिरोमणि हुए, आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने हमें पढ़ाया, ये हमारा सौभाग्य था कि हमारा ऐसे कुल में जन्म हुआ था। श्रोताओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री समयसागर महाराज ने बताया कि यथाजात लिंग करण नहीं उपकरण है। जैसे दृश्य को स्पष्ट देखने के लिए नयन पर उपनयन सहायक है, ऐसे ही यथाजात लिंग मोक्ष मार्ग की साधना में उपकरण है।यथाजात लिंगी ही अनावृत महाव्रती है। आवरण का एक धागा भी तीर्थंकरत्व में बाधक है। यथाजात भाव लिंगीं ही तीर्थंकर पद का धारक होता है। यथाजात भाव लिंगी रूप, स्वरूप की अनुभूति कर सिद्ध स्वरूपी मुक्ति पाता है/पा सकता है।

आपने यम और नियम का अंतर समझाते हुए कहा कि अंतिम श्वास तक संकल्प के साथ व्रत का पालन करना यम है और व्रतों का सावधि संकल्प के साथ व्रत का पालन करना नियम है। दिगम्बर मुनि सल्लेखना समाधि मरण के लिये यम नियम के साथ साधना करता है, जीवन व्यतीत करता है।जिससे मृत्यु की भी मृत्यु हो जाये ऐसी मृत्यु ही समाधिमरण है। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु होगी ये सुनिश्चित है, किंतु जिसका मरण हो उसका पुन: जन्म हो ये नियम नहीं है।समाधि मरण कर मृत्यु की जिसने मृत्यु कर ली हो उसका पुन: जन्म नहीं होगा और वह जन्म मरण से मुक्त है उसने मुक्ति पा ली है। आपने कहा कि हितमितप्रिय वाणी के के साथ निज आत्मा का कल्याण करते हुए पर कल्याण के भाव रखना सोलहकारण भावना का भाव है।आज आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के समाधिमरण मृत्यु महोत्सव के दिवस यही भावना भाता हूं जैसा उन्होंने कल्याण किया ऐसा ही हमारा जो मेरे साथ बैठे हैं और जो सामने हैं सबका कल्याण हो। -**वेदचन्द जैन**

आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज का पूर्ण भव्यता से मनाया 52 वां समाधि दिवस

जतारा (विश्व परिवार)। बुंदेलखंड गौरव श्रमणाचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज की जन्म नगरी, श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र आदिश्वर धाम जतारा में, परम पूज्य युग शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रिय शिष्य एवं परम पूज्य नवाचार्य श्री समय सागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती, परम पूज्य श्री सौम्य सागर जी, निश्चल सागर जी एवं निरापद सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में गुरु नाम गुरु आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज का 52वां समाधि दिवस पूर्ण भव्यता से मनाया गया।

भारतीय जैन संगठन तहसील अध्यक्ष एवं जैन समाज उपाध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने बताया कि प्रात: काल की बेला में राजेंद्र कुमार, देवेंद्र कुमार, शैंकी बुखारिया आचार्य भगवन महा मांगलिक पूजन हेतु गाजे बाजे के साथ अष्ट मंगल द्रव्य लेकर जिनालय प्रांगण में पहुंचे जहा श्री जी के सामूहिक अभिषेक, शांति धारा उपरांत पूज्य आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज एवं आचार्य विद्यासागर जी महाराज की पूजन संपन्न की गई। श्री जी की शांति धारा करने का सौभाग्य सप्तम प्रतिमा धारी हरिश्चंद्र, अशोक कुमार, धीरेंद्र कुमार, इंजी.अतिशय जैन, इंजी. संतोष कुमार मोदी, डॉ सुनील कुमार -श्रीमती इंदिरा जैन ललितपुर, महेंद्र टानगा, इंजी. पवन मोदी, विजय सगरवारा आदि को प्राप्त हुआ। पूजन उपरांत कुमारी मौली जैन गाजियाबाद ने मंगलाचरण के माध्यम से अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी उसके बाद शुरू हुआ गुरु के गुणो का गुणानुवाद। नगर में विराजमान परम पूज्य त्रय मुनिराजों ने आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और गुरु उपकारों को याद करते हुए बताया कि आचार्य प्रवर ज्ञानसागर जी महान तपस्वी, बाल ब्रह्मचारी, कवि ह्रदय, संस्कृत और हिंदी में अनेक महाकाव्यों की रचना करने वाले, स्वाध्याय प्रेमी, लेखनी के धनी, करुणा और वात्सल्य की मूर्ति, शांति प्रिय, बहुत विनय शील और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। जीवन के अंतिम समय में उन्होंने अपने शिष्य को ही अपना गुरु बना लिया और उनसे समाधि देने के लिए प्रार्थना की। आचार्य प्रवर ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के गुरु थे जिन्होंने अपने अंतिम समय में आचार्य विद्यासागर महाराज को ही अपना गुरु बना लिया और उनके चरणों में आकर बैठ गए। आपका जन्म 24 अगस्त 1897, भाद्रपद कृष्ण एकादशी को राजस्थान के सीकर जिले के राणोली गांव में हुआ था एव ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या दिनांक 1 जून 1973 को प्रात: 10:50 पर समता भाव से और अत्यंत शांत परिणामों के बीच इस नश्वर देह का त्याग कर देवलोक की ओर गमन किया कार्यक्रम का संचालन पत्रकार अशोक कुमार जैन द्वारा किया गया।

ज्ञान, चारित्र के साथ संयम धारण करके कषाय और शरीर को क्रश कर संलेखना धारण करने से मनुष्य जीवन सार्थक होता है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

बांसवाड़ा (विश्व परिवार)। वर्तमान में तीर्थंकरों का जिन शासन चल रहा है इसमें जीव अपना कल्याण कर सकते हैं श्रावक को श्रद्धावान, विवेकवान और क्रियावान होना चाहिए। ऐसे श्रावक देव शास्त्र और गुरु के भक्त होते हैं। सभीको ऐसा जीवन बनाना चाहिए जिससे पाप का बंध नहीं हो। उन्हें चलने, चेष्टा करने, बैठते, बोलने भोजन करने सोने धार्मिक कार्य आदि में ऐसा आचरण करना चाहिए जिससे पाप का बंध नहीं हो ऐसा उपदेश गुरुजन देते हैं क्योंकि उनका जीवन भी इसी प्रकार समीचीन पूर्ण रहता है, उनकी भाषा सीमित मधुर और कल्याणकारी होती है वह श्रावक को जीवन में यथार्थ रूप से धर्म धारण करने का कल्याणकारी उपदेश देते हैं यह मंगल देशना पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने खांदू कॉलोनी बांसवाड़ा में आयोजित धर्म सभा में प्रकट की। ब्रह्मचारी गज्जू भैय्या समाज अध्यक्ष अमृत लाल अनुसार आचार्य श्री ने प्रवचन में आगे बताया कि कषाय सभी प्राणियों में होती है आत्म साधकों में भी अल्प होती है जो शीघ्र नष्ट हो जाती है कषाय लंबे तीव्र काल तक रहने से बैर रूपी गांठ लग जाती है कमठ के जीव ने बैर के कारण 10 भव तक पारसनाथ भगवान पर उपसर्ग किया परेशान किया।आज आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज का समाधि दिवस है सन 1971 में आचार्य ज्ञानसागर जी किशनगढ़ में विराजित थे तब हम भी मुनि अवस्था में दीक्षा गुरु आचार्य धर्मसागर जी के साथ गए तब आचार्य ज्ञानसागर जी ने संघ की अगवानी की। 17 दिनों तक साथ में रहे आचार्य ज्ञानसागर जी ने धर्म सभा में कहा धर्म के बिना ज्ञान अधूरा है, बाद में आचार्य धर्मसागर जी ने प्रवचन में कहा ज्ञान के बिना धर्म अधूरा है। पहले साधुओं में एक दूसरे के प्रति वात्सल्य रहता था। छोटे बड़े का भेद नहीं देखते थे।आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज ने क्षुल्लक अवस्था में आकर प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांति सागर जी महाराज की परंपरा के आचार्य श्री वीर सागर जी के शिष्य आचार्य शिवसागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ली। आपने श्रावक अवस्था में और साधु जीवन में अनेक शास्त्रों की रचना की। आचार्य श्री ने आपके ज्ञान और चारित्र की प्रशंसा की। आचार्य श्री ने समयसार और महाबंध ग्रंथ का जिक्र कर बताया कि महाबंध ग्रंथ का स्वाध्याय जरूर करना चाहिए कैसे व्यक्ति जीता है, कैसे कर्मो से छूटता है, कैसे कर्मों का बंध होता इसका महाबंध ग्रंथ में उल्लेख है। नसीराबाद समाज ने ज्ञान सागर जी को आचार्य पद को दिया तब दीक्षा गुरु आचार्य श्री शिवसागर जी जीवित थे। आचार्य श्री शिव सागर जी की समाधि 16 फरवरी 1969 को हुई आपकी समाधि के बाद 24 फरवरी 1969 को आचार्य श्री धर्म सागर जी तृतीय पट्टाधीश गुरु परंपरा में बनाए गए। ज्ञान और चरित्र से जीवन उन्नत बनता है। राजेश पंचोंलिया एवम समाज प्रवक्त्ता अक्षयडोंगरा अनुसार आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने आचार्य श्री शांतिसागर जी की परंपरा का ज्रिक कर श्री वीरसागर जी, श्री शिवसागर जी श्री धर्मसागर जी, श्रीअजीतसागर जी की मूल ब्रह्मचारी परंपरा का ज्रिक किया परंपरा पूर्वजों से प्राप्त होती है शिष्य की महानता गुरु के साथ रहने से होती हैं आचार्य ज्ञान सागर जी और आचार्य श्री विद्यासागर जी ने कभी परंपरा से नाम जोड़ा नहीं था। कषाय के मंदता होने पर संलेखना धारण की जाती है शरीर और कषाय को क्रश करना ही संलेखना होता है। जन्म और मरण का उत्सव बिरले प्राणियों का ही होता है।सभी को ज्ञान चारित्र के साथ संयम दीक्षा लेकर संलेखना पूर्वक मनुष्य जीवन को सार्थक करना चाहिए आचार्य श्री शिव सागर जी कहते थे, मनुष्य को आड़े होकर नही खड़े होकर घर से निकलना चाहिए संयम धारण करना चाहिए।इसी में जीवन की सार्थकता है

-**राजेश पंचोंलिया, अक्षय डोंगरा**

ग्रीष्मावकाश में पथिकों को गुड़पानी पिलाने का मजा

संस्मरण : छुट्टियां हर किसी को मोहित करती है, किंतु बचपन में मिली गरमी की छुट्टियों को आजीवन बुलाया नहीं जा सकता। दरअसल स्कूल और पढ़ाई से दूर मामागांव की अमराई से आम खाने, नानी के हाथों की मलाई चाटने और तालाब में भैस की पूंछ पकड़ कर तैरने जैसे अनेक आनंद का अवसर छुट्टियां देती थीं।

शहरी धूल, धुआं, कोलाहल से दूर गांव के मैदान में कबड्डी, गिल्ली डंडा खेलना, रात्रि के समय चांदनी रात में धूप छांव, नदी पहाड़ खेलना, लोक मंचों पर रामलीला, नाचा, तमाशा का मंचन देखना बेहद मजेदार होता था।मंच के सामने बैठने हेतु पहले से बारदाना को बिछाकर अपना स्थान सुरक्षित रख लेते थे। ईमानदारी भी क्या गजब की थी, किसी के बिछाए बारदाना को कोई छूता नही था।

गांव में बहती नदी के सूखे हिस्से में बनी बाड़ी से तरबूज, खरबूज, खीरा ककड़ी की चोरी करना तो बड़ा ही रोमांचक होता था। वहां के चौकीदार को बाड़ी के पीछे गाय घूसने की झूठी खबर देते थे और डंडा लेकर जैसे ही वह पीछे की ओर गाय भगाने जाता था, बानर सेना की तरह बाड़ी में हम टूट पड़ते थे।चौकीदार के लौटने के पहले उसे चकमा देकर हम रफूचक्कर हो जाते थे।इस चक्कर में पकड़े जाने, शिकायत होने पर दो चार बार नाना जी के हाथों बबूल की दातुन से मार का स्वाद भी चखना पड़ा था।

शरारतें तो खूब होती थीं, पर गांव के संस्कार, लोक संस्कृति, पर्व परम्पराओं, विवाह के रस्म रिवाजों को भी जानने का मौका छुट्टियां देती थीं।नाना जी के साथ गावं के बाहर बरगद पेड़ के नीचे मटकों में गुड़ पानी भरकर बैठना और आते जाते प्यासे पथिकों को पिलाना अत्यंत ही सुखकारी होता था। आज छुट्टियों के वो मजेदार दिन याद करते हुए मन कहता है-पैसा भले ही कम था, पर बचपन में दम था।हम भी अमीर हुआ करते थे, बारिश में कागज के जहाज हमारे भी चला करते थे।बालपन में गुजारे दिन जीवन की किताब के पन्नों पर अमिट स्याही लिखे हुए हैं।

-**विजय मिश्रा अमित, रायपुर**

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर थूवोनजी में किया वृक्षारोपण

आचार्य श्री की प्रेरणा पा किया जा रहा है वृक्षारोपण

अशोक नगर (विश्व परिवार)। मध्य भारत के सबसे बड़े तीर्थ अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी में विश्व पर्यावरण दिवस पर दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी ने वृक्षारोपण रोपण कार्य क्रम का शुभारंभ कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल महामंत्री विपिन सिंघई मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा मंडलसंयोजक शैलेन्द्र दददा के द्वारा पौध रोपण के साथ प्रारंभ किया इस दौरान मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि आगामी समय में तीर्थ क्षेत्र को और भी हरा भरा वनने के लिए सुनिश्चित किया गया कि आगामी दिनों में वर्षात शुरू होते ही तीर्थ क्षेत्र पर फल दार पौधो के साथ ही छाया दार वृक्षों को रोपा जायेगा। आचार्य श्री की भावना के अनुसार वृक्षारोपण किया जा रहा है।

इस दौरान कमेटी के महामंत्री विपिन सिंघई ने कहा कि हम सभी कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल के साथ नेमावर में संत शिरोमणि आचार्य भगवंत गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में पांच वर्ष पूर्व गये थे तो उन्होंने कहा था कि थूवोनजी पथरीली भूमि के साथ ही चट्टानों वाला एरिया है वहां वड़े गमलों में पेड़ रोपें जाये आचार्य श्री की प्रेरणा से हमने सैकड़ों ट्रक मिट्टी डालकर आज क्षेत्र की आवो हवा में सकुन घोल दिया है आगामी दिनों में हम बड़े स्तर पर वृक्षारोपण करेंगे इस दौरान कमेटी के मंत्री राजेन्द्र हलवाई मिडिया प्रभारी अरविंद कचनार जैन समाज के कोषाध्यक्ष सुनील अखाई वर्धमान अखाई काली मोदी मुंगावली अंसूल जैन कैंची बीड़ी जितेन्द्र मोदी सहित अन्य प्रमुख जन उपस्थित थे। इसके पहले थूवोनजी के खड़े बाबा भगवान आदिनाथ स्वामी के अभिषेक एवं एक सौ आठ रिद्धि मंत्रों से अभिषेक किया गया जिसका सौभाग्य सुनील अखाई वर्धमान अखाई जितेन्द्र मोदी आंसू जैन सहित अन्य भक्तों को मिला जिनका सम्मान कमेटी द्वारा किया गया। -**विजय धुर्रा**

बच्चों के संस्कारों को सुरक्षित रखकर ही हम अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख पाएंगे : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। बच्चों के संस्कारों को सुरक्षित रख करके ही हम अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख पाऐंगे। उपरोक्त उदगार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने वंटीनगर स्थित श्री धर्मनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के जिन विंव पंचकल्याणक महामहोत्सव के चतुर्थ दिवस दीक्षा कल्याणक के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि बच्चों पर संगति का विशेष प्रभाव पड़ता है, संगति संस्कारों पर हांवी हो जाती है उन्होंने उपस्थित एवं देश विदेश में इस कार्यक्रम को देख और सुन रहे सभी अभिभावकों को कहा कि वह अपने बच्चों की संगति पर विशेष नजर रखें जिससे वह अपना जीवन सलामती के साथ जी सकें। उन्होंने कहा कि मुझे आज बेहद प्रसन्नता है कि आज भावी भगवानों की जैन दीक्षा संपन्न हुई। उन्होंने कहा कि बच्चों पर इन संस्कारों का असाधारण प्रभाव पड़ता है। जब कभी कोई बच्चे ग्रेजुएट और उच्च शिक्षा के पश्चातअच्छी जांव के मिलते है और वह कहते है कि महाराज जी हमने आपसे वंहा पर संस्कार पाये थे आज हमारा जीवन सुरक्षित हो गया तो मुझे बेहद प्रसन्नता मिलती है।इस अवसर पर पाठशाला प्रणेता मुनि श्री निर्वेग सागर जी महाराज तथा शंकासमाधान के संचालक मुनि श्री संधान सागर जी महाराज ने बच्चों में जैनत्व संस्कार विधी को संपन्न कराया। प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया प्रात: 5 बजे से मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने विश्व प्रसिद्ध भावनायोग की भूमिका पर प्रकाश डालते हुये उससे होंने बाले फायदे के बारे में विस्तृत जानकारी दी एव 56 मिनट तक चले इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिला एवं पुरुषों ने भाग लिया प्रात: काल से ही पंचकल्याणक महामहोत्सव का विशाल पांडाल खचाखच भरा हुआ था 8 वर्षसे लेकर 12वर्ष के बालकों को मुनि श्री ने मंत्रोच्चारण के साथ जैनत्व के संस्कार दिये उनको मांस मदिरा तथा नशीले पदार्थों का त्याग कराते हुये पांच उदुम्बर फल एवं शहद का त्याग कराया।प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया भावना-योग मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज का तन को स्वस्थ-मन को मस्त एवं आत्मा को पवित्र बनाने का अभिनव प्रयोग है। जिसमें मुनि श्री ने अपने अनुभव में पाया कि इसे नियमित करने से मानसिक एवं शारिरिक व्याधियों से मुक्त हो सकते है। उपरोक्त कार्यक्रम दिनांक 7 जून को प्रात:5 बजे से पुन: किया जाऐगा खास बात यह है कि इसमें सभी लोग किसी भी धर्म संप्रदाय से सम्वंधित हो भाग ले सकते है। इस अवसर पर दादागुरु आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज का समाधि दिवस भी मनाया गया। तथा भगवान की दीक्षा कल्याणक की क्रिआओं को प्रतिष्ठाचार्य अशोक भैयाजी एवं अभय भैयाजी की संयोजन में संगीतकार नीलेश जैन बुड़ार की स्वर लहरियों के साथ संपन्न हुआ। -**अविनाश जैन**

मोटिवेशनल स्पीकर ब्रह्माकुमारी राधिका दीदी का व्याख्यान आज पॉवर कंपनी में

रायपुर (विश्व परिवार)। मोटिवेशनल स्पीकर ब्रह्माकुमारी राधिका दीदी का व्याख्यान छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज़ के मुख्यालय डंगनिया में कल 7 जून को शाम 4 से 5.30 बजे तक होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, विश्व शान्ति भवन चौबे कॉलोनी के तत्वावधान में इसका आयोजन पॉवर कंपनी के सेवा भवन स्थित सभा कक्ष में किया गया है।

इसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के संतुलन से संपूर्ण स्वास्थ्य का विकास के संबंध में सिक्स डायमेंशन टू सक्सेस एंड 8 एटीट्यूट आफ इलेक्टिव लिविंग पर व्याख्यान होगा। हैदराबाद की मोटिवेशन स्पीकर ब्रह्माकुमारी राधिका दीदी एक वरिष्ठ एवं अनुभवी राजयोग शिक्षिका हैं। इन्होने मनोविज्ञान विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की हैं एवं पिछले 26 वर्षों से हैदराबाद बंजारा हिल्स सेवाकेन्द्र में अपनी सेवाये दे रही हैं। इन्होने कई प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं, जिसमें संघर्ष समाधान, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, जीवन शैली प्रबंधन आदि आदि शामिल हैं। इन्होने अब तक जी.न्यूज, अपोलो हॉस्पिटल, भारत पेट्रोलियम, एल. एण्ड टी, पारले प्रोडक्ट, रिलायंस इण्डस्ट्रीज, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया, मिलिट्री हेडक्वॉर्टर ऑफ वॉर भारतीय नौसेना, हीरो मोटो कॉर्प, मारुति सुजुकी आदि-आदि अनेक प्रतिष्ठानों में व्याख्यान दिये हैं।

मैंने तो अपना फर्ज निभाया उपयोगी पौधे लगाकर अब आपकी बारी : कल्याणी कंसारी

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। वार्ड क्रमांक 7 केंद्र क्रमांक 5ट्ठ2 में 5 जून विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस के उपलक्ष्य में आंगनवाड़ी में नन्हे ट्ठमुने बच्चो वार्ड वासियों के साथ पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए आम करण, बेल, मीठा नीम, फूल के पौधे लगाए गए इस अवसर पर आंगन बाड़ी कार्यकर्ता कल्याणी कंसारी ने कहा की आज जितनी तीव्रता से पेड़ काटे जा रहे है उतनी ही तीव्रता से पेड़ लगा लगाया जाता तो आज हम जितने ताप से जल रहे है उनसे जलना न पड़ता आज दिखाने के लिए पेड़ तो लगा दिया जाता है किंतु देखरेख और खाद पानी नही देते जिसकी वजह से पौधे पेड़ भी नही बन पाता और पौधा रोपण के कुछ दिन बाद ही मुरझा कर मर जाता है जिससे अच्छी वर्षा की कल्पना नही की जा सकती पर्यावरण को व्यवस्थित रखने और जल संरक्षण के लिए वर्षा की आवश्यकता होती है और वर्षा पौधा रोपण और बच्चो की तरह देखरेख से होती है इसलिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करे। मैंने तो अपना फर्ज निभाया उपयोगी पौधे लगाकर अब आपकी बारी आप भी कही भी स्कूल, आंगनवाड़ी, घर वाटिका, सड़क किनारे, नदी किनारे अधिक से अधिक पौधा रोपण कर अपनी फर्ज अदा करें।

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 7 जून 2024

संक्षिप्त समाचार

घुटकू नवापारा में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री दीपक अग्रवाल के निर्देशन में आज ग्राम पंचायत घुटकू नवापारा में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। जिसमें ग्रामीणों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन, जल संरक्षण एवं संवर्धन, पॉलीथिन मुक्त पंचायत आदि विषयों पर आधारित चर्चा की गई। साथ ही जल स्त्रोतों एवं पेड़ पौधों के समीप साफसफाई किया गया। साथ ही लगाए गए पेड़ो के देखभाल एवं संरक्षण के लिए पेड़ों को रक्षा सूत्र बांधकर पर्यावरण संरक्षण के लिए शपथ दिलाई गई। पर्यावरण संरक्षण के विषय में बताया गया की शुभ अवसर पर पौधे गिफ्ट कर लोगों को पर्यावरण जागरूकता का संदेश देना चाहिए। समूह की महिलाए अपने घर में फ्लदार पेड़ लगाए जिससे स्वास्थ्य और पोषण को भी बढ़ावा मिलेगा। अत्यधिक जल के दोहन को रोकने के लिए लोगों को जागरूक करे और पेड़ लगाने के प्रेरित करे। कार्यक्रम में गांव को स्वच्छ बनाने के लिए पॉलीथिन मुक्त पंचायत बनाने के लिए भी लोगो को जागरूक किया गया।

कलेक्टर ने किया वृद्धाश्रम का आकस्मिक निरीक्षण

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने जिला मुख्यालय गरियाबंद के समीप ग्राम भिलाई में समाज कल्याण विभाग से मान्यता प्राप्त स्वैच्छिक संस्था प्रेरक द्वारा संचालित सियान सेवा सदन,वृद्धाश्रम एवं घरौंदा केन्द्र का आकस्मिक निरीक्षण किया।कलेक्टर द्वारा संस्था में निवासरत प्रत्येक वरिष्ठ नागरिक एवं दिव्यांगजनों से मिलकर व्यक्तिगत चर्चा के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी ली गई एवं संस्था के कर्मचारियों से चर्चा किया गया।संस्था में निवासरत वरिष्ठ नागरिक एवं दिव्यांगजनों को फ्ल,बिस्कीट एवं शीतल पेय का वितरण किया गया।संस्था प्रमुख को वृद्धजनों की आवश्यक देख-रेख,मेडिकल सुविधा,चिकित्सकीय जाँच, भोजन एवं भवन के रख-रखाव तथा परिसर में आवश्यक पेंड़-पौधे लगाकर सुसज्जित करने के निर्देश दिये है।

आस्था विद्या मंदिर जावंगा में अधिकारियों ने किया वृक्षारोपण

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एजुकेशन सिटी जावंगा के आस्था विद्या मंदिर जावंगा में आज जिले के आला अधिकारी उप पुलिस महानिरीक्षक श्री कमलोचन कश्यप (भापुसे), कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी (भाप्रसे), पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय (भापुसे), जिला पंचायत सीईओ श्री कुमार विश्वरंजन (भाप्रसे), वन मंडलाधिकारी डॉ जाधव सागर रामचंद्र (भावसे), डीआईजी सीआरपीएफ श्री विकास कराटिया द्वारा 50 पौधे रोपकर एजुकेशन सिटी जावंगा में 6000 पौधे रोपने का लक्ष्य दिया गया। अधिकारियों ने परिसर मे आम नारियल जैसे फ्लदार पौधों का रोपण किया। जैसा कि सभी जानते है मानव और प्रकृति का गहरा नाता है। जहां प्रकृति है, वहां जीवन है और जब इसी प्रकृति को क्षति पहुंचती है तो जीवन पर भी असर पड़ता है। इस प्रकार पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय की नन्ही पुत्री ''अमाया'' के द्वारा भी आस्था परिसर में पौधा रोपण किया गया।

एक हजार रूपये नही दिये तो कर दी दोस्त की हत्या

सरगुजा(विश्व परिवार)। सरगुजा के लखनपुर थानाक्षेत्र में हुई युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने मृतक के दोस्त को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने एक हजार रुपए नहीं देने पर अपने दोस्त की हत्या कर दी। किसी को शक ना हो इसके लिए लाश को झाड़ियों में छुपा दिया था। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। बता दें कि 4 जून को लखनपुर थाना इलाके के एक गार्डन में झाड़ियां के बीच रामनारायण नाम के एक युवक का शव मिला था। शव को देखने पर हत्या का मामला लग रहा था। सरगुजा पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुटी हुई थी। पुलिस को पता चला कि मृतक का दोस्त उसके साथ देखा गया था। जिसपर शक के आधार पुलिस ने मृतक के दोस्त सुशील दास को हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ की तो उसने अपना जूर्म कबूल कर लिया। फ्लिहाल पुलिस उसे गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई कर रही है। पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि रामनारायण और सुशील दास घटना के दिन एक साथ शराब पी रहे थे। इसी दौरान सुशील दास ने रामनारायण की जेब में रखे 1000 रुपए को देने कहा। रामनारायण ने पैसे देने से इनकार कर दिया तो आवेश में आकर सुशील दास ने उसकी गला दबाकर हत्या कर दी और लाश को गार्डन के झाड़ियों में छिपा दिया। पुलिस ने इस मामले में आरोपी युवक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया है।

कलेक्टर संजय ने कलेक्टोरेट परिसर में किया पौधरोपण

सभी पौधरोपण करने के साथ ही पौधों को संरक्षित करने की भी जिम्मेदारी लें - कलेक्टर

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने आज कलेक्टोरेट परिसर में पौधरोपण किया। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ सुश्री सुरूचि सिंह एवं अन्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी पौधरोपण किया। कलेक्टर ने जामुन, नीम जैसे पौधे कलेक्टोरेट परिसर में रोपित किए। उन्होंने कहा कि सभी पौधरोपण करने के साथ ही पौधों को संरक्षित करने की भी जिम्मेदारी लें और प्रतिदिन पौधों में पानी दें। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग जिन्हें बागवानी में रूचि है, ऐसे लोगों का एक समूह बनायें और कलेक्टोरेट के गार्डन को और खुबसूरत और अच्छा बनायें। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्था ग्राम बरगा में पौधरोपण किया।

इस दौरान उन्होंने वहां लगाए गए अमरूद, चीकू, आम, बेर, पपीता, केला एवं अन्य पौधों का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण केन्द्र में समूह की महिलाओं एवं अन्य लोगों को विभिन्न गतिविधियों से संबंधित अच्छा प्रशिक्षण दें। इस दौरान वे स्वरोजगार के लिए किए जा रहे अपने अनुभवों एवं गतिवधियों को भी साझा करें, जिससे दूसरों को प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कहा कि मुनगा के पौधे जरूर लगाएं। उन्होंने डबरी में मछली पालन करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने इस दौरान मनरेगा के तहत किए जा रहे कार्यों का अवलोकन किया। कलेक्टर इस दौरान महिलाओं से रूबरू हुए और उन्हें जल संरक्षण तथा पौधरोपण के लिए प्रोत्साहित किया तथा उनकी समस्याएं भी सुनी। उन्होंने कहा कि डबरी निर्माण जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य है। जमीन में मिट्टी बनी रहे, इसके लिए पौधरोपण जरूरी है। डबरी से जल संरक्षण होने पर पौधों को पानी मिलेगा और भू-जल का स्तर भी बढ़ेगा। उन्होंने महिलाओं से कहा कि छायादार एवं फ्लदार पौधे लगाएं। इसके लिए राशि भी प्रदान की जाएगी। कोशिश करने से सफ्लता जरूर मिलती है। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि जल संरक्षण के लिए जिले में लगातार प्रयास किया जा रहा है। धान के बदले ऐसी फ्सल लेना चाहिए जिसमें कम पानी की आवश्यकता होती है। मनरेगा अंतर्गत आप सभी को न केवल रोजगार मिला है, बल्कि गांव की बेहतरी के लिए आप सभी कार्य कर रहे हैं। जिला पंचायत सीईओ सुश्री सुरूचि सिंह ने कहा कि छतों में जल के संरक्षण के लिए व्यवस्था करें तथा सोख्ता गड्ढा भी बनवाएं। जिससे भू-जल में बढ़ोत्तरी होगी। महिलाओं से कहा कि मनरेगा के अंतर्गत डबरी निर्माण के माध्यम से आप सभी को रोजगार मिला है। इसके साथ ही जल संरक्षण के लिए भी कार्य किया जा रहा है।

कन्हारपुरी में आयोजित जल जगार उत्सव में शामिल हुई कलेक्टर

मुड़ा तालाब अब बनेगा अमृत सरोवर

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले में जल संरक्षित करने की दिशा में कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी की पहल पर सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में कुरूद विकासखण्ड के ग्राम कन्हारपुरी में रेल्वे विभाग द्वारा सीएसआर मद से साढ़े 5 एकड़ क्षेत्र में बनाए जाने वाले तालाब गहरी एवं सौंदर्यीकरण कार्य का कलेक्टर सुश्री गांधी की उपस्थिति में स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने आज शुभारंभ किया। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत सुश्री रोमा श्रीवास्तव, एसडीएम कुरूद, सीईओ जनपद पंचायत कुरूद सहित अन्य अधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कलेक्टर सुश्री गांधी ने कहा कि जिले में भूजल स्तर तेजी से नीचे गिरते जा रहा है, ऐसे में रेल्वे द्वारा तालाब गहरी और सौंदर्यीकरण कार्य कराने से जल संरक्षण में सहयोग मिल जाएगा। उन्होंने इसके लिए रेल्वे विभाग को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे धान के बदले कम पानी वाले फ्सल जैसे दलहन, तिलहन इत्यादि लें। कलेक्टर ने ग्रामीणों से कहा कि शासन हर स्तर पर आपकी मदद नहीं कर सकती, कुछ मदद आपको अपने लिए स्वयं करनी होगी। गांवों में व्यर्थ पानी ना बहे, इसके लिए नल को देखते ही बंद करें, तालाबों, अन्य जलस्त्रोतों और नालियों की श्रमदान कर साफ-सफाई करते रहें, तभी आप अपने गांव को आदर्श बनाएंगे तथा पर्यावरण और जल को संरक्षित कर सकेंगे। इस अवसर पर उपस्थित रेल्वे बोर्ड के अधिकारी श्री सूरज प्रसाद ने कहा कि तालाब गहरी और सौंदर्यीकरण कराकर हमें पर्यावरण बचाने का मौका मिला है। उन्होंने कहा कि हमारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम गांव को एक सुन्दर तालाब दे सकें, इसे संभालना आपकी जिम्मेदारी होगी। उन्होंने बताया कि साढ़े पांच एकड़ में बन रहे इस तालाब में 30 नग पौधों का रोपण किया जाएगा। श्री प्रसाद ने कहा कि मुड़ा तालाब अब अमृत सरोवर कहलाएगा। कार्यक्रम में सीईओ जिला पंचायत सुश्री रोमा श्रीवास्तव ने कहा कि पर्यावरण को बचाने के लिए जल, वायु, पृथ्वी का योगदान है।

कलेक्टर ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट परिसर में किया वृक्षारोपण

पर्यावरण और प्रकृति की संरक्षण के लिए दिया जागरूकता संदेश

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री दीपक अग्रवाल ने आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट परिसर में आम का पौधा रोपा। साथ ही अधिकारी कर्मचारियों ने भी परिसर में अमरूद, जामुन और रुद्राक्ष का पौधा रोपण किया। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने इस अवसर पर सभी को विश्व पर्यावरण दिवस की शुभकामनाएं दी। साथ ही सभी से अपने घरों और आस-पास क्षेत्रों में वृक्षारोपण कर पौधों को जीवित रखने की जिम्मेदारी लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि आने वाले मानसून में ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करें और अपने घर, आसपास के परिवेश, गांव और शहरों और जंगलों को खूब हरा-भरा बनाएं। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर द्वय श्री राकेश गोलछा, श्री पंकज डाहिरे, डिप्टी कलेक्टर श्री रामसिंग सोरी, सहायक संचालक उद्यानिकी श्री मिथिलेश देवांगन सहित कलेक्ट्रेट परिसर में स्थित विभागों के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि वृक्षारोपण का उद्देश्य पर्यावरण और प्रकृति की संरक्षण करना है। प्रकृति के दोहन से वातावरण का तापमान बढ़ता है इससे लोगों को प्राकृतिक आपदा एवं जल संकट जैसी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने हर साल बरसात के मौसम में अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनका देख-भाल एवं संरक्षण के लिए संकल्प लेने कहा। वृक्षारोपण से जलवायु संतुलन बरकरार रहता है। साथ ही आसपास शुद्ध वातावरण और हरियाली भी बनी रहती है। वृक्षों से हमें सिर्फ छाया ही नही मिलता बल्कि शुद्ध वायु और फ्ल-फूल आदि भी मिलते हैं।

एबीवीटीपीएस से सेवानिवृत्त कनिष्ठ पर्यवेक्षक दयादास महंत को दी गई भावपूर्ण विदाई

कोरबा(विश्व परिवार)। अटल बिहारी वाजपेयी ताप विद्युत गृह (एबीवीटीपीएस) मड़वा से मई माह में कनिष्ठ पर्यवेक्षक दयादास महंत सेवानिवृत्त हो गए। सेवानिवृत्त हो रहे कर्मचारी को पॉवर कंपनी परिवार की ओर से भावपूर्ण विदाई दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्षकार्यपालक निदेशकएसके. बंजारा ने उनके कार्यों की सराहना करते हुए पॉवर कंपनी की ओर से आभार जताया। कार्यपालक निदेशकके हाथों सेवानिवृत्त कर्मचारी को स्मृति चिह्न व सेवा प्रमाण-पत्र भेंट किया गया। समारोह में विशिष्टि अतिथि अतिरिक्त मुख्य अभियंतापीके श्रीवास्तव, एसडी द्विवेदी, आरके साव और एन. लकरा की गरिमामयी उपस्थिति रही। कांफ्रेंस हाल में आयोजित दीर्घ सेवा सम्मान समारोह में कार्यपालक निदेशक एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को स्वस्थ व सुखमय जीवन की शुभकामनाएं दी गईं। दयादास महंतने विद्युत मंडल एवं पॉवर कंपनी में 38 वर्ष 07 माह 18 दिन की सेवाएं दी। वह 13 जनवरी 2015 से एबीवीटीपीएस मड़वा में सेवाएं दे रहे थे। उनकी प्रथम नियुक्ति 15 अक्टूबर 1985 को एचटीपीएस कोरबा पश्चिम में संयंत्र परिचारक श्रेणी-तीन के पद पर हुई थी। इस अवसर पर सेवानिवृत्त श्री महंतने अपने लंबे कार्यकाल का अनुभव सुनाया।कार्यक्रम का संचालन करते हुए कल्याण अधिकारी आरएस टेकाम द्वारा सेवानिवृत्तकर्मचारी का संक्षिप्त जीवन परिचय का उल्लेख किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस : ग्रामीणों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। जिले के बरमकेला विकासखंड के ग्राम पंचायत तौंसीर के आश्रित ग्राम घूंचापाली में महात्मा गांधी नरेगा भारत सरकार निर्मित अमृत मानसरोवर तालाब के मेड में आदर्श संरचना मानते हुए विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक विशेष उत्सव मनाया गया। इस उत्सव में प्रज्ञा यादव मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत बरमकेला, मनरेगा के पीईओ एवं ग्राम पंचायत सरपंच, सचिव व पंचगण व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रज्ञा यादव ने पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की। इसके बाद वहांउपस्थित ग्रामीण जनों ने भी एक एक पौधा रोपण कर रक्षा करने के लिए संकल्प लिए। इसके साथ साथ ग्रामीण तालाब को भी साफसफाई रखना के लिए भी उत्साहित हुए। मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने कहा कि पर्यावरण को बचाने के लिए संकल्प को सभी पूरा करें। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से प्रकृति और मानव जीवन खतरे में है। इसे देखते हुए हम सब पौधे लगाएं और उन्हें पेड़ बनने तक संरक्षण दें। पर्यावरण से हम जीवित हैं। अगर पर्यावरण नहीं होगा तो हम भी नहीं होंगे। अमृत सरोवर के आसपास को साफ-सफाई किया जाए और स्वच्छता रखी जाए। वृक्षारोपण बहुत अधिक आवश्यक है ग्लोबल वार्मिंग जैसे खतरों से बचने के लिए हमारे लिए आवश्यक है और मैं यह चाहती हूं कि अपने जनपद पंचायत बरमकेला के अंतर्गत समस्त ग्रामीण से, सभी लोगों से अपील करती हूं कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण करें और अधिक से अधिक संख्या में वृक्षों को लगा करके हमारे पर्यावरण की रक्षा करें। इस कार्यक्रम में कमलेश कुमार मेहरा मनरेगा पीईओ, सरपंच अशोक कुमार अग्रवाल, सचिव धनेश चौहान, रानी, राजकुमारी,सपना सावित्री लतिया , वृन्दावन, सेवक आदि उपस्थित थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जिले के वरिष्ठ अधिकारियों ने किया पौधरोपण

अमृत सरोवर के मेड़ पर भी लगाया जा रहा पौधा

जगदलपुर(विश्व परिवार)। बस्तर वन मंडल के द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस पर जिले के वरिष्ठ अधिकारियों ने श्यामाप्रसाद मुखर्जी सभागार परिसर में पौधारोपण किया। पौधारोपण कार्यक्रम में सीसीएफ आरसी दुग्गा ने बादाम के पौधे, कलेक्टर विजय दयाराम के ने आम के पौधे, पुलिस अधीक्षक शलभ सिन्हा ने जामुन के पौधे, सीईओ जिला पंचायत प्रकाश सर्वे ने नीम के पौधे, वनमण्डलाधिकारी उत्तम गुप्ता ने आम के पौधे का रोपण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीसीएफ आरसी दुग्गा ने कहा कि वन है तो जल है, जल है तो कल है, इसके लिए हमे अधिक-अधिक पेड़ लगाने है, पौधों-पेड़ों का संरक्षण करना है ताकि पर्यावरण को हराभरा बनाए रखे। उन्होंने पेड़ों के महत्व को बताया कि पेड़ के आसपास अन्य जगह से चार डिग्री तापमान की कमी रहती है, इसके अलावा वायु, ध्वनि प्रदूषण को रोकने में अहम भूमिका निभाती है। कलेक्टर विजय दयाराम के. ने कहा कि हम ईको फ्रेंडली के रूप में पैदा हुए और जीवन को बेहतर करने के लिए पर्यावरण का अपने हिसाब से उपयोग किए। पर्यावरण को नुकसान भी हुआ, इस नुकसान की भरपाई के लिए सभी अपने स्तर पर प्रयास करते है। ईको फ्रेंडली को बढ़ावा दे कर आने वाले भावि पीढ़ी हेतु पर्यावरण को बचाने के लिये हमे पेड़ों के महत्व को समझना होगा और अधिक से अधिक पौधे लगाने होगें। विश्व पर्यावरण दिवस पर शासन के निर्देशानुसार जिले के ग्राम पंचायतों में चिन्हांकित अमृत सरोवर के मेड़ों में जनपद पंचायतों के द्वारा पौधरोपण किया जा रहा है।

अमृत सरोवर स्थलों में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

रायगढ़(विश्व परिवार)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जिले के अमृत सरोवर स्थलों के पास विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस मौके पर अमृत सरोवर स्थलों पर वृक्षारोपण अभियान, सफाई गतिविधियां जल संसाधन एवं जैव विविधता के महत्व के बारे में जागरूकता अभियान आयोजित किए गए साथ ही जल निकायों के कायाकल्प एवं जीर्णोद्धार के द्वारा सकारात्मक प्रभाव के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल के निर्देशन एवं सीईओ जिला पंचायत श्री जितेन्द्र यादव के मार्गदर्शन में जिले के 78 अमृत सरोवर स्थलों में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई, जिसमें ग्राम पंचायत के नागरिकों एवं हितग्राहियों की विशेष सहभागिता रही। इसके साथ ही गांवों में पर्यावरण प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए आगामी 12 जून तक स्वच्छ हरित ग्राम सप्ताह का भी आयोजन किया जाएगा। जिसके तहत ग्राम पंचायतों में भूजल को रिचार्ज करने एवं जलभराव को लंबे अवधि तक रोकने हेतु शोकपिट एवं रिचार्ज पिट का निर्माण कराया जाएगा। वर्मी कम्पोस्ट एवं नोडप पिट का निर्माण कर जैविक खाद प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य में सुधार हेतु कार्य किए जायेंगे।

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
विश्व परिवार

व्यापार समाचार

विश्व पर्यावरण एक्सपो का आगाज, एक छत के नीचे जुटीं 20 हजार कंपनियां

ग्रेटर नोएडा(एजेंसी)। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर सभी जगह पर अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। विभिन्न माध्यमों से लोगों को जागरूक भी किया जा रहा है। इसी कड़ी में बुधवार से ग्रेटर नोएडा के एक्सपो सेंटर में विश्व पर्यावरण एक्सपो के नाम से पर्यावरण और स्थिरता विकास पर देश का सबसे बड़ा आयोजन शुरू हो रहा है। एक्सपो में देश की 20 हजार से ज्यादा कंपनियां एक छत के नीचे जमा होंगी और अपने-अपने उत्पादों की प्रदर्शनी करेंगी। यह आयोजन 7 जून तक चलेगा। इसमें बुधवार को केंद्रीय पर्यावरण राज्य मंत्री अश्वनी चौबे भी हिस्सा लेंगे। एक्सपो में प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों एवं प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, हरित नवाचार, जल संरक्षण प्रौद्योगिकी, कूड़ा प्रबंधन और ईको फ्रेंडली परियोजनाओं से जुड़ी कंपनियां हिस्सा लेंगी। सभी कंपनियां उत्पादों प्रदर्शनी लगाएंगी और इन पर सभागार में विचार विमर्श भी होगा। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के 20 से अधिक महापौर उपस्थित रहेंगे। आरडब्लूए परिसंघ-उत्तर प्रदेश (सीओआरडब्ल्यूए-यूपी), फ्लैट ओनर्स फेडरेशन गाजियाबाद और ग्रीन सोसायटी ऑफ इंडिया भारतीय प्रदर्शनी सेवाओं के सहयोग से मुख्य विषय अपशिष्ट और जल प्रबंधन पर चर्चा करेंगे। इस आयोजन में प्रदूषण नियंत्रण उपकरण और प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, सौर पैनल और सौर उत्पाद, सफाई और स्वच्छता उपकरण, हरित नवाचार, ऊर्जा दक्षता उपकरण और प्रौद्योगिकियां, पर्यावरण अनुकूल उत्पाद, जल संरक्षण प्रौद्योगिकियां और जल प्रदूषण नियंत्रण प्रौद्योगिकी पर 5वीं अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी भी लगाई जा रही है। इस प्रदर्शनी में प्रदर्शक अपने नवाचारों और प्रौद्योगिकियों को संभावित सहयोगियों और नीति निर्माताओं के सामने प्रदर्शित कर सकते हैं और साथी उद्यमियों से जुड़ सकते हैं तथा नेटवर्क बना सकते हैं। इस प्रदर्शनी में बायोफ्यूल एक्सपो, बायोडिग्रेडेबल एक्सपो, ग्रीनोवेशन वर्ल्ड ऑफ रीसाइक्लिंग एक्सपो, विश्व पर्यावरण सम्मेलन, इंडिया बायोफ्यूल मीट, ग्रीन इंडिया अवार्ड्स, ऑल इंडिया मेयर एंड आरडब्ल्यूए समिट, तथा रूफटॉप एक्सपो का भी आयोजन होगा।

बुल मार्केट अभी खत्म नहीं हुआ है, आगे जारी रहेगी तेजी

नई दिल्ली(एजेंसी)। एग्जिट पोल के अनुमान के मुताबिक, भारतीय जनता पार्टी को लोकसभा चुनाव 2024 में बहुमत न मिलने के कारण भारतीय शेयर बाजार में मंगलवार को 6 प्रतिशत तक की बड़ी गिरावट देखने को मिली थी। ऐसे में निवेशकों के मन में ये सवाल बना हुआ है कि आखिर आने वाले समय में बाजार कैसा रहेगा और कहां उन्हें फोकस करना चाहिए? बाजार के जानकारों का कहना है कि एग्जिट पोल में बीजेपी को स्पष्ट बहुमत मिलने के कारण सोमवार को एक बड़ी रैली हुई और नतीजे अनुमान से कमजोर आने के कारण बाजार में बड़ी गिरावट हुई। इस वजह से आने वाले कुछ दिनों में बाजार में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है, लेकिन लंबी अवधि में बाजार सकारात्मक रिटर्न देगा। निवेशकों को लार्जकैप और सही वैल्यूशन वाले शेयर पर फोकस करना चाहिए। जैसे ही नई सरकार बनेगी, बाजार में स्थिरता लौट आएगी। यस सिक्योरिटीज के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अमर अंबानी ने कहा, भारतीय शेयर बाजार में वैल्यूएशन उच्च स्तर पर थे। अनुमान से कमजोर नतीजे आने पर गिरावट हुई है। अगर नई एनडीए सरकार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बनते हैं तो हमें नहीं लगता कि बाजार में और 10 प्रतिशत की गिरावट होगी। उन्होंने आगे कहा कि निवेशकों को स्टॉक के चयन को लेकर सावधानी बरतनी होगी और ऐसे स्टॉक का चुनाव करना चाहिए, जिसकी वैल्यूएशन ठीक हो और भविष्य में अच्छी आय अर्जित करने की क्षमता हो। साथ ही कहा कि बुल मार्केट अभी खत्म नहीं हुआ है। बैंकिंग के साथ कॉरपोरेट सेक्टर और हाउसिंग मार्केट में कोई बबल जैसी स्थिति नहीं है। अर्थव्यवस्था की स्थिति मजबूत बनी हुई है। आनंद राठी ग्रुप के सह-संस्थापक और वाइस चेयरमैन प्रदीप गुप्ता ने कहा कि ऐतिहासिक डेटा के अनुसार, उतार-चढ़ाव के बावजूद भी बाजार निवेशकों को सकारात्मक रिटर्न देने में सफल रहा है। निवेशकों को लंबी अवधि के लिए फोकस करना चाहिए। अपने पोर्टफोलियो में विविधता लानी चाहिए। अगर सरकार की नीतियों में निरंतरता जारी रहती है तो इन्फ्रास्ट्रक्चर, डिफेंस और कैपिटल गुड्स सेक्टर को फायदा होगा। स्थिरता और लचीलेपन को देखते हुए लार्ज कैप शेयर हमारी पसंद हैं।

शेयर बाजार में तूफानी तेजी, सेंसेक्स 1,400 अंक से ज्यादा उछला

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार में बुधवार के कारोबारी सत्र में तूफानी तेजी देखने को मिल रही है। दोपहर 12:30 बजे तक सेंसेक्स 1,483 अंक या 2.06 प्रतिशत बढ़कर 73,581 अंक और निफ्टी 474 अंक या 2.17 प्रतिशत बढ़कर 22,359 अंक पर था। बता दें, मंगलवार को चुनाव के परिणाम एग्जिट पोल अनुमान के मुताबिक न आने के कारण भारतीय शेयर बाजार में बड़ी गिरावट हुई थी। सेंसेक्स और निफ्टी 6 प्रतिशत फिसलकर बंद हुए थे। लेकिन बुधवार को बाजार में चौतरफा खरीददारी देखने को मिल रही है। निफ्टी एफएमसीजी इंडेक्स इस तेजी को लीड कर रहा है और इसमें 4.5 प्रतिशत की बढ़त बनी हुई है। फिन सर्विस, मेटल, फार्मा, आईटी और ऑटो इंडेक्स में 3.5 प्रतिशत तक की तेजी है। केवल निफ्टी पीएसयू बैंक और पीएसई ही लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। इंडिया विक्स में रिकॉर्ड 27 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है और यह 19.62 अंक पर पहुंच गया है। सेंसेक्स पैक में एचयूएल, एमएंडएम, इंडसइंड बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, एशियन पेंट्स, टेक महिंद्रा और एचसीएल टेक टॉप गेनर्स हैं। दूसरी तरफ एलएंडटी, पावर ग्रिड, एसबीआई और एनटीपीसी टॉप लूजर्स हैं। बाजार में रुझान सकारात्मक बना हुआ है। एनएसई पर 1,299 शेयर हरे निशान में और 945 शेयर लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। बाजार में तेजी के कारण बीएसई का बाजार पूंजीकरण 7 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 402 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया है, जो कि मंगलवार को बाजार बंद होने पर 395 लाख करोड़ रुपये था। बाजार को लेकर जानकारों का कहना है कि जब तक सरकार नहीं बन जाती, तब तक बाजार में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। निवेशकों को लंबी अवधि के नजरिए से सही वैल्यूएशन और अच्छी ग्रोथ वाले शेयरों में निवेशित रहना चाहिए।

जानिक सिनर फ्रेंच ओपन के सेमीफाइनल में

पेरिस(एजेंसी)। इटली के जानिक सिनर 10वीं सीड ग्रिगोर दिमित्रोव को लगातार सेटों में 6-2, 6-4, 7-6(3) से हराकर फ्रेंच ओपन के सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं और इसके साथ ही उनका विश्व का नंबर एक खिलाड़ी बनना तय हो गया है क्योंकि सर्बिया के नोवाक जोकोविच चोट के कारण टूर्नामेंट से हट गए हैं। सिनर को नंबर एक पोजीशन हासिल करने और जोकोविच की जगह लेने के लिए फ़ाइनल में पहुंचने की जरूरत थी लेकिन उनके क्वार्टरफाइनल में दिमित्रोव के खिलाफ जीत हासिल करने और जोकोविच के टूर्नामेंट से हट जाने से उनका काम आसान हो गया। जोकोविच को दाएं घुटने की चोट के कारण कैस्पर रुड के खिलाफ क्वार्टरफाइनल मुकाबले से हटना पड़ा। जोकोविच को अपनी नंबर एक पोजीशन बरकरार रखने के लिए फ़ाइनल में पहुंचना जरूरी था। इटली के सिनर इस तरह शीर्ष स्थान पर पहुंचने वाले 29वें खिलाड़ी और अपने देश के पहले खिलाड़ी बनेंगे। सिनर, विश्व रैंकिंग में नंबर एक बनने वाले इटली के पहले खिलाड़ी बनेंगे, का सेमीफाइनल में कार्लोस अल्काराज या स्टेफानोस सितसिपास से मुकाबला होगा। सिनर ने इस साल के शुरू में जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन के रूप में अपना पहला मेजर खिताब जीता था और दिमित्रोव के खिलाफ दो घंटे 30 मिनट तक चले क्वार्टरफाइनल में पूरी तरह नियंत्रण में दिखे। 22 वर्षीय सिनर ने मैच में 29 विनर्स लगाए और चार बार दिमित्रोव की सर्विस तोड़कर उनके खिलाफ करियर मुकाबलों में 4-1 की बढ़त बना ली। सिनर का इस वर्ष ग्रैंड स्लैम में 12-0 का रिकॉर्ड हो गया है। अपने पहले फ्रेंच ओपन सेमीफाइनल में सिनर का कार्लोस अल्काराज या स्टेफानोस सितसिपास से मुकाबला होगा। करियर मुकाबलों में सिनर का अल्काराज के खिलाफ 4-4 का रिकॉर्ड है जबकि सितसिपास के खिलाफ वह 3-6 से पिछड़े हुए हैं। सिनर कूल्हे की चोट के कारण रोम इवेंट से चूकने के बाद फ्रेंच ओपन में पहुंचे थे और सेमीफाइनल तक के सफर में उन्होंने अब तक मात्र एक सेट गंवाया है। बुल्गारिया के 33 वर्षीय दिमित्रोव, जो सभी चार मेजर के क्वार्टरफाइनल तक पहुंचे हैं, वह प्रदर्शन नहीं दोहरा पाए जिसकी बदौलत उन्होंने चौथे दौर में ह्यूबर्ट हर्काज के खिलाफ जीत हासिल की थी। नए नंबर एक बनाने जा रहे सिनर का इस वर्ष 33-2 का रिकॉर्ड हो गया है।

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए वेस्टइंडीज की टीम का ऐलान

सेंट जॉन्स(एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली रिचर्ड्स-बॉथम सीरीज के लिए वेस्टइंडीज ने 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है। टीम की कमान क्रेग ब्रेथवेट के पास है। वहीं जेसन होल्डर जैसे खतरनाक ऑलराउंडर की टीम में वापसी हुई है। तेज गेंदबाज अल्जारी जोसेफ टीम के उप-कप्तान होंगे। टीम से कई खिलाड़ियों को बाहर का रास्ता भी दिखाया गया है। वहीं कुछ युवा खिलाड़ियों को मौका मिला है। 23 वर्षीय सलामी बल्लेबाज मिकाइल लुइस को पहली बार टेस्ट टीम में शामिल किया गया है। वेस्टइंडीज के पूर्व अंडर-19 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी ने लीवार्ड आइलैंड्स हरिकेंस के लिए अपने पहले प्रथम श्रेणी सत्र में 48.71 की औसत से 682 रन बनाए। अगर लुइस इंग्लैंड में वेस्टइंडीज के लिए डेब्यू करते हैं, तो वे सेंट किट्स के पहले खिलाड़ी बन जाएंगे, जो टेस्ट कैप पहनेंगे। चोट और एक छोटे ब्रेक के बाद वापसी कर रहे होल्डर टीम में कई तेज गेंदबाजी विकल्पों में से एक हैं। उनके साथ उप-कप्तान जोसेफ, रोच, सील्स और शमर जोसेफ इस टेस्ट टीम में शामिल हैं। 19 वर्षीय तेज गेंदबाज ईसाई थोर्न एक डेवलपिंग प्लेयर के रूप में टीम के साथ ट्रैवल करेंगे, जिन्होंने अपने पहले प्रथम श्रेणी सत्र में प्रभावशाली प्रदर्शन किया था। इस दौरान उन्होंने अपने पहले आठ मैचों में 16.29 की औसत से 31 विकेट लिए थे। टीम टोनब्रिज स्कूल में प्रशिक्षण शिविर के लिए 23 जून को इंग्लैंड पहुंचेगी। उसके बाद 4 जुलाई से बकिंघम में 4 दिवसीय अभ्यास मैच खेला जाएगा। मुख्य चयनकर्ता डेसमंड हेन्स ने कहा, टीम को अनुभव और उभरती हुई प्रतिभाओं के साथ तैयार किया गया है। इंग्लिश कंडीशन में खेलने की चुनौती का सामना करने के लिए एक मजबूत टीम कॉम्बिनेशन बनाई गई है। चयनित प्रत्येक खिलाड़ी ने लगातार अच्छा प्रदर्शन और कड़ी मेहनत से अपनी जगह बनाई है। हमें विश्वास है कि अनुभवी खिलाड़ियों और उभरते हुए चेहरों का यह मिश्रण इंग्लैंड के खिलाफ शानदार प्रदर्शन करेगा।

8वें राउंड में कार्लसन से हारे प्राग्नानंदा

स्टावेंजर (नॉर्वे)(एजेंसी)। नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट के आर्मागेडन गेम के आठवें राउंड में भारतीय ग्रैंडमास्टर रमेशबाबू प्राग्नानंदा मंगलवार को वर्ल्ड नंबर-1 मैग्नस कार्लसन से हार गए। इस जीत में मैग्नस कार्लसन ने 14.5 अंक हासिल करते हुए पूरे एक अंक की बढ़त बनाई, जबकि हिकारू नाकामुरा 13.5 अंकों के साथ दूसरे और प्राग्नानंदा 11 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। हिकारू नाकामुरा ने क्लासिकल शतरंज में फिरोजा को हराया, लेकिन युवा प्रतिभा ने शानदार बचाव किया और ब्लिट्ज शोडाउन में विजयी हुए। इस बीच, विश्व चैंपियन डिंग लिरेन भी अपने गेम में पिछड़ गए और उन्हें आर्मगेडन टाईब्रेकर में फैबियानो कारुआना के खिलाफ हार मिली। महिलाओं की स्पर्धा में विश्व चैंपियन जू वेंजुन ने पिया क्रैम्लिंग के खिलाफ क्लासिकल गेम जीतकर स्टैंडिंग में बढ़त हासिल की। इस बीच, लेई टिंगजी ने जीएम कोनेरू हम्पी को हराकर अपनी पहली क्लासिकल जीत हासिल की। वहीं वैशाली रमेशबाबू ने आर्मगेडन गेम में अन्ना मुजिचुक को हराया। दो राउंड शेष रहते, वेनजुंग 14.5 अंकों के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि मुजिचुक 13 अंकों के साथ दूसरे और वैशाली 11.5 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। इससे पहले, आर प्राग्नानंदा ने सोमवार को नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट में विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराकर एक और बड़ा उलटफेर किया था। टूर्नामेंट में उच्च रैंक वाले खिलाड़ियों के खिलाफ प्राग्नानंदा की यह तीसरी जीत थी।

कच्चे तेल की कीमतों में 4 डॉलर प्रति बैरल की गिरावट से भारत को होगा फायदा

नई दिल्ली(एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में 4 डॉलर प्रति बैरल से अधिक की गिरावट आई है। अब यह चार महीने के निचले स्तर पर पहुंच गई है। ऐसा ओपेक प्लस द्वारा इस वर्ष उत्पादन में वृद्धि की अनुमति देने के बाद हुआ है। अमेरिका में पहले से ही कच्चे तेल का भंडार काफी ज्यादा है। अगस्त के लिए बेंचमार्क ब्रेंट ऑयल वायदा बुधवार को 77.50 डॉलर पर आ गया। डब्ल्यूटीआई (वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट) पर जुलाई के कच्चे तेल का वायदा 73.22 डॉलर पर था। 7 फरवरी के बाद पहली बार तेल की कीमतें 80 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आई हैं। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है। देश अपनी जरूरतों का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है और तेल की कीमतों में गिरावट से देश के आयात बिल में कमी आएगी। इससे चालू खाता घाटा (सीएडी) कम होगा और रुपया मजबूत होगा। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से घरेलू बाजार में पेट्रोल, डीजल और एलपीजी के दाम भी कम होते हैं, जिससे देश में मुद्रास्फीति में कमी आती है। सरकार ने यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर पश्चिमी दबावों के बावजूद तेल कंपनियों को रियायती कीमतों पर रूस से कच्चा तेल खरीदने की अनुमति देकर देश के तेल आयात बिल को कम करने की कोशिश की है। रूस अब भारत को कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बन गया है। इसने इराक और सऊदी अरब की जगह ली, जो पहले शीर्ष स्थान पर थे। आईसीआरए की एक रिपोर्ट के अनुसार, रूस से तेल आयात की कीमत वित्त वर्ष 2023 और वित्त वर्ष 2024 के 11 महीनों में खाड़ी देशों की तुलना में 6.4 प्रतिशत और 15.6 प्रतिशत कम थी। रूस से सस्ता तेल खरीदना जारी रखने की भारत की रणनीति के चलते वित्त वर्ष 2022-23 के पहले 11 महीनों के दौरान देश के तेल आयात बिल में लगभग 7.9 बिलियन डॉलर की बचत हुई थी और देश को अपने चालू खाता घाटे को कम करने में भी मदद मिली।

लक्ष्य, प्रियांशु जीते; वेन ची सू के खिलाफ शुरुआत करेंगी सिंधु

जकार्ता(एजेंसी)। लक्ष्य सेन और प्रियांशु राजावत ने अपने-अपने मुकाबले जीतकर 1,300,000 डॉलर की पुरस्कार राशि वाले इंडोनेशिया ओपन 2024 बीडब्लूएफ 1000 टूर्नामेंट के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। लक्ष्य ने जापान के कांता सुनेयामा को मंगलवार को 40 मिनट में 21-12, 21-17 से पराजित किया जबकि राजावत ने हमवतन एच एस प्रणय को 30 मिनट में ही 21-17, 21-12 से चौंका दिया। पिछले सप्ताह सिंगापुर ओपन के सेमीफाइनल में पहंचने वाली ट्रीसा जोली और गायत्री गोपीचंद ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए चीनी ताइपे की जोड़ी चेंग यू-पेई और सुन यू-सिंग को मात्र 29 मिनट में पहले दौर में 21-15, 21-11 से हरा दिया। बी सुमित रेड्डी और सिक्की रेड्डी ने पहले गेम हारने के बाद वापसी करते हुए 57 मिनट में अमेरिकी जोड़ी विनसन चियू और जैनी गई को 18-21, 21-16, 21-17 से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। इस बीच किरण जॉर्ज को पुरुष एकल में चीन के होंग यांग वेंग से तीन गेमों के संघर्ष में 21-11, 10-21, 20-22 से हार का सामना करना पड़ा। दो बार की ओलम्पिक पदक विजेता पी वी सिंधु अपने अभियान की शुरुआत बुधवार को चीनी ताइपे की वेन ची-सू के खिलाफ करेंगी जबकि आकर्षि कश्यप भी पहले राउंड में पूर्व विश्व चैंपियन थाईलैंड की रत्चानोक इंतानोन से भिड़ेंगी।

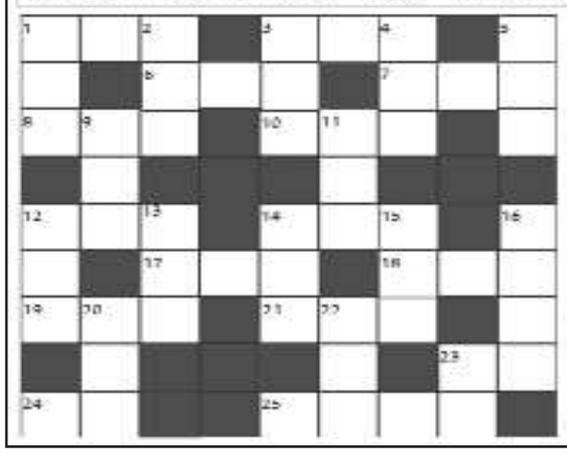

शब्द सामर्थ्य -245

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

[illegible]

ऊपर से नीचे

[illegible]

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 244 का हल

सू- दोकू क्र.245

9		8		1		7		
4		6			7		5	
	3			6		8		9
		3			1		6	
5			6			9		
		9		5			3	
3			7		9			1
	5			2		3	9	
1		4			8		7	

नियम

1. कुल 81 वर्ग हैं, जिसमें 9 वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

सू-दोकू क्र.244 का हल

7	5	6	4	1	2	8	3	9
3	4	8	6	7	9	2	1	5
1	2	9	5	3	8	7	4	6
2	8	1	9	5	6	4	7	3
6	9	7	2	4	3	5	8	1
5	3	4	7	8	1	9	6	2
8	7	2	1	6	5	3	9	4
4	6	5	3	9	7	1	2	8
9	1	3	8	2	4	6	5	7

कवि सम्मान समारोह 9 जून को

रायपुर (विसं)। कला एवं साहित्य तथा रंगमंच के लिए समर्पित अखिल भारतीय संस्था 'संस्कार भारती' एवं 'लोकरंजनी' लोक कला मंच रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में 9 जून को शाम 6 बजे से कवि सम्मान समारोह का आयोजन वृंदावन हॉल सिविल लाइन में किया जाएगा. संस्कार भारती' के डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर ने बताया कि कार्यक्रम में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कवियों में पद्मश्री डॉ सुरेंद्र दुबे, मीर अली 'मीर', रामेश्वर वैष्णव, रामेश्वर शर्मा, सुशील भोले, डॉ. चितरंजन कर, शकुंतला तरार, डॉ. सीमा श्रीवास्तव, उर्मिला देवी उर्मी आदि शामिल होंगे.

एनएमडीसी, बचेली परियोजना में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया

बचेली (विश्व परिवार)। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री बी. वेंकटेश्वरलु, अधिशासी निदेशक के मार्गदर्शन में विश्व पर्यावरण दिवस-2024, बैलाडीला लौह अयस्क खान, बचेली कॉम्प्लेक्स द्वारा हर्ष एवं उल्लास से मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा घोषित विषय भूमि का पुर्नोद्धार, मरुस्थलीकरण और सुखे से निपटने की शक्ति पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम जैसे वृक्षारोपण, निबंध लेखन, नारा लेखन, चित्रकला प्रतियोगिताएं तथा जूट थैलों का वितरण आयोजित किये गये।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम श्री बी. वेंकटेश्वरलु, अधिशासी निदेशक द्वारा वृक्षारोपण किया गया जिसके उपरान्त श्री डी.पी. शेट्टी, श्री एस.एम. जगदीश्वर, श्री जे.सी.दास, श्री जागेश्वर प्रसाद, श्री देबाशीष पॉल एवं अन्य विभागाध्यक्षों द्वारा संपन्न किया गया। जिसके उपरान्त श्री बी. वेंकटेश्वरलु, अधिशासी निदेशक द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलायी गयी। तत्पश्चात मंच पर उपस्थित सभी सम्मान्नीय अधिकारी एवं युनियन प्रतिनिधी द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर संबोधन दिया गया। बीआईओएम, बचेली कॉम्प्लेक्स द्वारा प्लास्टिक वेस्ट को कम करने हेतु जुट थैला का वितरण करने का निश्चय किया गया है। जिसका शुभारंभ श्री बी. वेंकटेश्वरलु अधिशासी निदेशक द्वारा सभी विभागाध्यक्षो एवं युनियन प्रतिनिधियों को जुट थैला प्रदान कर किया गया।

कार्यक्रम में आगे विजेताओं को श्री बी. वेंकटेश्वरलु, अधिशासी निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। अंत में श्री अंशुमान त्रिपाठी, सहायक महाप्रबंधक (पर्यावरण) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

एसईसीएल के सुश्रुत योजना के अभ्यर्थियों को नीट 2024 में बड़ी सफलता

योजना में पंजीकृत 40 में 39 बच्चे हुए पास, 31 बच्चे एमबीबीएस/बीडीएस/बीएएमएस के लिए पात्र

बिलासपुर (विश्व परिवार)। साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) के नीट कोचिंग सहायता सीएसआर कार्यक्रम एसईसीएल के सुश्रुत के अभ्यर्थियों ने नीट 2024 में बड़ी सफलता हासिल की है। हाल ही में घोषित नीट 2024 के परिणामों में, कार्यक्रम में पंजीकृत 40 में से 39 बच्चों ने कट-ऑफ को पार कर लिया है और परीक्षा उत्तीर्ण की है।

परिणामों की मुख्य विशेषताएं : योग्य छात्र- 40 में से 39, पात्रता- प्राप्त रैंकिंग के आधार पर, 13 छात्र MBBS पाठ्यक्रमों के लिए पात्र हैं, 18 छात्र BDS/BAMS पाठ्यक्रमों के लिए पात्र हैं।

एसईसीएल की पहल से कोयलांचल के बच्चों का डॉक्टर बनने का सपना होगा साकार : एसईसीएल द्वारा एसईसीएल के सुश्रुत योजना को आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आने वाले कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं को मुफ्त आवासीय नीट कोचिंग प्रदान करने के लिए 2023 में शुरू किया गया था। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के कोयला बेल्ट क्षेत्रों में आदिवासी बाहुल्य ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले इन बच्चों के लिए यह योजना वरदान साबित हुई है जिनके लिए प्राइवेट कोचिंग लेना संभव नहीं था। लेकिन एसईसीएल से मिली मदद से अब कोयलांचल के बच्चे भी डॉक्टर बनने के सपने को हकीकत में बदल पाएंगे।

कोयला मंत्रालय के मार्गदर्शन में शुरू किए गए इस कार्यक्रम में छात्रों का चयन नीट पैटर्न पर आधारित एक प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से किया गया था, और बिलासपुर में एक निजी कोचिंग संस्थान के साथ साझेदारी में कोचिंग प्रदान की गई थी। इस कार्यक्रम में नियमित राष्ट्रीय स्तर की टेस्ट सीरीज़, मेंटरिंग और रहने-खाने की सुविधाएँ शामिल हैं, जिसका पूरा खर्च एसईसीएल द्वारा वहन किया जाता है।

सीएमडी डॉ प्रेम सागर मिश्रा ने अभ्यर्थियों को दी बधाई : इस अवसर पर सीएमडी डॉ प्रेम सागर मिश्रा ने अभ्यर्थियों को बधाई देते हुए कहा कि एसईसीएल का प्रयास है कि कोयलांचल में कोई भी प्रतिभा संसाधनों के अभाव में सपने देखना न छोड़े और हमारी यह पहल बच्चों को सपने देखने एवं उन्हें पूरा करने की आज़ादी देता है। मुझे विश्वास है कि ये बच्चे आगे चलकर डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएँ देकर एक स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में योगदान देंगे।

सामुदायिक सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगी यह योजना : यह पहल बेहतर शिक्षा के माध्यम से कोयला क्षेत्र में समुदायों को सशक्त बनाने के एसईसीएल के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। गुणवत्तापूर्ण कोचिंग और सहायता प्रदान करके, एसईसीएल आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए एक उज्जवल भविष्य बनाने में मदद कर रहा है, जिससे वे अपने सपनों को पूरा कर सकें और समाज में योगदान दे सकें।

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन से नवनिर्वाचित सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने सौजन्य भेंट की

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन से आज राजभवन में प्रदेश के स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा, धर्मस्व, पर्यटन मंत्री तथा लोकसभा के नवनिर्वाचित सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने सौजन्य मुलाकात की। इस अवसर पर राज्यपाल श्री हरिचंदन ने उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

रायपुर उत्तर विधायक पुरन्दर मिश्रा जी का अभिनंदन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर उत्तर विधायक श्री पुरन्दर मिश्रा जी ने रायपुर लोकसभा में उत्तर विधानसभा से ऐतिहासिक विजय दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका तो निभाई जिनके कुशल नेतृत्व में हम सभी कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।साथ ही साथ उड़ीसा क्षेत्र के लिए मिली जवाबदारियों का भी बहुत ही शानदार तरीके से निर्वहन किया गया। रायपुर लोकसभा से बृजमोहन भैया के भारी मतों से जीतने एवं उड़ीसा में पूर्ण बहुमत की सरकार बनने पर हम पुरन्दर भैया का हृदय से अभिनन्दन करते है।

प्रदेश का प्रतिनिधित्व बढ़े अच्छी बात होगी, कुछ न कुछ अच्छा ही होगा: विजय शर्मा

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव 2024 में छत्तीसगढ़ में भाजपा का परफॉरमेंस जबरदस्त रहा। प्रदेश की 11 सीटों में से 10 सीटों में भाजपा को जीत मिली है. वहीं मोदी कैबिनेट में छत्तीसगढ़ के सांसदों को केंद्रीय मंत्रालय मिलने की चर्चा तेज हो गई है. यहां से किसे मौका मिलेगा, इस पर उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि जितने लोगों को मिले उतना अच्छा है. प्रदेश का प्रतिनिधित्व बढ़े अच्छी बात होगी, कुछ न कुछ अच्छा ही होगा। छत्तीसगढ़ में भाजपा की बड़ी जीत के बाद केंद्रीय नेतृत्व ने प्रदेश के नव निर्वाचित सांसदों और प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को कल दिल्ली बुलाया है. सीएम साय सभी सांसद आज दिल्ली जाएंगे. इस पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि 9 जून को नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे. सभी राज्यों के मुख्यमंत्री दिल्ली पहुंचेंगे. संसदीय दल की बैठक है, उसमें आज हम सब सभी जाएंगे. प्रदेश स्टार पर कांग्रेस संगठन में बदलाव को लेकर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि यह कांग्रेस का आंतरिक मसला है. लेकिन पीसीसी चीफ दीपक बैज का बस्तर से टिकट काट दिया गया, यह समझने वाली बात है. छग की जनता अनवरत भाजपा के साथ है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर बांटे गये फलदार और छायादार पौधा

रायपुर (विश्व परिवार)। 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में प्रधानमंत्री आवास योजना, ग्रामीण अंतर्गत निर्मित एवं निर्माणाधीन आवास परिसर में फलदार एवं छायादार वृक्षों को वितरण किया गया। इन पौधों को संरक्षित रखने हेतु हितग्राहियों को शपथ दिलाया गया, इस उपलक्ष में ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि सरपंच सचिव रोजगासहायक जनपद पंचायत के आवास शाखा की अधिकारी कर्मचारी सहित स्थानीय रहवासी अधिक संख्या में उपस्थित रहे।

सालेकसा-दरेकसा रेल खंड के बीच अप एवं डाउन रेलवे लेवल क्रॉसिंग पर गिर्डर लॉन्चिंग का कार्य, कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के नागपुर रेल मंडल के सालेकसा-दरेकसा रेल खंड के बीच में अप एवं डाउन रेलवे लेवल क्रॉसिंग पर गिर्डर लॉन्चिंग का कार्य किया जाएगा, इसके कारण कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित। इस कार्य को दिनांक 07 जून को एवं 12 जून, 2024 को पावर ब्लॉक लेकर कार्य किया जायेगा। इस कार्य के फलस्वरुप कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित हो रहा है। जिसकी जानकारी इस प्रकार है-

रदद होने वाली गाडियां : दिनांक 07 एवं 12 जून, 2024 को दुर्ग से छूटने वाली 08741 दुर्ग-गोंदिया मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को गोंदिया से छूटने वाली 08742 गोंदिया-दुर्ग मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को गोंदिया से छूटने वाली 08743 गोंदिया-नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को इतवारी से छूटने वाली 08744 नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी)-गोंदिया मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को डोंगरगढ़ से छूटने वाली 08711 डोंगरगढ़-गोंदिया मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को गोंदिया से छूटने वाली 08712 गोंदिया-नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को गोंदिया से छूटने वाली 08713 गोंदिया-नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) से छूटने वाली 08714 नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी)-गोंदिया मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को बालाघाट से छूटने वाली 08715 बालाघाट-नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 07 एवं 12 जून, 2024 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) से छूटने वाली 08716 नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी)-गोंदिया मेमू पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। रेल प्रशासन यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है तथा सहयोग की आशा करता है।

रायपुर रेल मंडल में हावड़ा-अहमदाबाद एक्सप्रेस में 2 बच्चों की तबीयत खराब होने पर प्राथमिक उपचार की सहायता दी गई

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर रेल मंडल में 24x7 संचालित कमर्शियल कंट्रोल को आज दिनाँक 06.06.2024 को गाड़ी संख्या 12834 हावड़ा-अहमदाबाद एक्सप्रेस में जनरल डिब्बे में 02 बच्चे के बेहोश होने की सूचना कमर्शियल कंट्रोल ने तत्काल मुख्य स्टेशन प्रबंधक भाटापारा श्री अजय कुमार को सूचना दी मुख्य स्टेशन प्रबंधक भाटापारा ने प्लेटफार्म नम्बर 03 पर 13:45 बजे गाड़ी के आगमन पर पहुंचकर बच्चों को सहायता दी गई।

उक्त गाड़ी में जनरल टिकट पर बिलासपुर से भाटापारा तक अपनी माँ नाम सोमना राजपूत पति पुनीत कुमार उम्र 42 वर्ष साकिन बिजनौर उत्तर प्रदेश अन्य परिजनों के साथ आगे जनरल डिब्बे में यात्रा कर रहे थे उनके साथ यात्रा कर रहे बालिका नाम - भव्या राजपूत उम्र 15 वर्ष और बालक नाम- कृतग्य राजपूत उम्र 10 वर्ष के अचानक बेहोश हो गए थे जिनको अन्य यात्रियों की मदद से पानी एवं ओ आर एस घोल दिया गया जिसमें उक्त दोनों बच्चों को होश आ गया था। दोनों बच्चों को सही हालत में भाटापारा में उतार कर तत्काल प्राथमिक उपचार हेतु जिला अस्पताल भाटापारा ले जाया गया जिसमें जिला अस्पताल भाटापारा द्वारा नर्सिंग ऑफिसर अनुराग सिंह के द्वारा उक्त बालक और बालिका का चेक कर प्राथमिक उपचार दिया गया तथा तथा ठीक लगने पर उक्त नर्सिंग ऑफिसर के परामर्श से उनके परिवार वालों के द्वारा स्वयं एक गाड़ी बुक कर उनकी मौसी के निवास स्थान टैगोर नगर रायपुर के लिए समय लगभग 14:55 बजे रवाना किया गया। मुख्य स्टेशन प्रबंधक अजय कुमार एवं ओटोमेटिक टिकट वेंडिंग मशीन सुविधा प्रदाता धरमदास के साथ सहायक उप निरीक्षक संतोषी शर्मा के द्वारा बच्चों को सहायता दी गई।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में श्री शांति नाथ भगवान का तप ज्ञान और मोक्ष कल्याणक पर्व मनाया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। आज श्री 1008 शांति नाथ भगवान के तप ज्ञान और मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष में टैगोर नगर मंदिर की में अभिषेक शांति धारा पूजन के पश्चात शांति विधान का आयोजन किया गया।

आज शांति धारा करने का सौभाग्य श्रीमान मानमल जी विनीत बड़जात्या और श्रीमान राजकुमार श्री वीर जैन नमन जैन को प्राप्त हुआ। श्रीमान नितिन पंडित जी के सानिध्य में श्री शांतिनाथ विधान सानंद सम्पन्न हुआ।

आज निर्वाण लाडू शुद्धता पूर्वक घर से बनाकर श्रीमती शिल्पी जैन और सीमा दीदी लाई थी उनके इस प्रयास की हम सभी अनुमोदना करते है।

आज के धार्मिक अनुष्ठान के लिए महिला मंडल के सफल प्रयास के लिए बहुत बहुत साधुवाद महिला मंडल धार्मिक और सामाजिक कार्यों में सदा अग्रणी रहती है मंदिर समिति उन के प्रयासों की सराहना करती है। टैगोर नगर मंदिर परिवार के सभी सदस्यों ने धर्म लाभ लिया। **-प्रणीत जैन**

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक प्रदीप गुप्ता द्वारा ली गई डायल-112 के प्रभारी अधिकारियों की समीक्षा बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। डायल 112 के द्वारा छ.ग. में अपराध नियंत्रण, जनकल्याण एवं आपातकालीन सेवा के दृष्टिकोण से कार्य किया जा रहा है। राज्य में डायल 112 के सेवा में सुधार एवं कार्य प्रणाली में गुणवत्ता लाने के द्रष्टिकोण से सेन्ट्रलाईज्ड कमाण्ड एण्ड कंट्रोल सेंटर डायल 112, सिविल लाईन रायपुर में आज 112 की योजना संचालित 11 जिलों के डीपीसीआर प्रभारियों की समीक्षा बैठक आयोजित किया गया। समीक्षा बैठक में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (योजना प्रबंध एवं तकनीकी सेवायें) श्री प्रदीप गुप्ता (भा.पु.से.) के द्वारा डायल 112 के स्टाफ को जनकल्याण को ध्यान में रखते हुए अनुशासित रह कर आपातकाल में जनता को त्वरित सहायता पहुँचाने एवं प्रशिक्षण के माध्यम से व्यवसायिक कार्यकुशलता में सुधार करने की बात कही। पुलिस अधीक्षक डायल 112 हेमसागर सिदार के द्वारा डीपीसीआर प्रभारियों को डायल 112 के उद्देश्य के परिपालन में अपराध नियंत्रण एवं आम जनता के हित में कार्य करने की बात कही गई है। उक्त समीक्षा बैठक में सी-4 अन्य अधिकारियों के द्वारा भी डायल 112 योजना में आम जनता से समन्वय स्थापित कर कार्य करने की बात कही गई है। उक्त समीक्षा बैठक में डायल 112 सी-4 के अधिकारी एवं कर्मचारी विभिन्न जिलों के डीपीसीआर प्रभारी एवं डायल 112 की योजना में शामिल एजेंसी के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

छत्तीसगढ़ में हाईटेक होगा पूरा सरकारी सिस्टम

जानिए पारदर्शी और जवाबदेही प्रशासन के लिए कहां क्या किया जा रहा है बदलाव

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में विष्णु देव की सरकार सुशासन लाने के लिए आईटी का बड़े पैमाने में इस्तेमाल करेगी। जनकल्याणकारी योजनाओं से मॉनिटरिंग से लेकर वित्तीय प्रबंधन करों की वसूली, भूमि संबंधी रिकार्ड के पंजीयन, संधारण और संशोधन सहित सभी जरूरी क्षेत्रों में आईटी का इस्तेमाल होगा। सरकार द्वारा लोगों तक शासकीय योजनाओं की पहुंच का दायरा बढ़ाने के साथ ही प्रशासन को मजबूत और पारदर्शी बनाने के लिए ठोस पहल करने जा रही है। सरकार के बजट में इन सभी विषयों को शामिल किया गया है। जनकल्याणकारी योजनाओं की मॉनिटरिंग के लिए अटल डैशबोर्ड की शुरूआत की गई है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री साय की पहल पर हाल में ही देश के जाने-माने विशेषज्ञों के साथ आईआईएम रायपुर में दो दिनों तक बौद्धिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सुशासन तथा नागरिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सभी उपायों का चर्चा की गई। वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट में रायपुर-भिलाई सहित आसपास के क्षेत्रों के स्टेट कैपिटल के रूप में विकसित कर विश्व स्तरीय आईटी सेक्टर तैयार करने का लक्ष्य है। सभी विभागों में आई.टी. के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए 266 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

नवा रायपुर, अटल नगर में लाईवलीहुड सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस एवं दुर्ग जिले में सेंटर ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप स्थापित करने का लक्ष्य है। स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए इन्यूबेशन सेंटर की स्थापना तथा बी.पी.ओ. एवं के.पी.ओ. को आकर्षित करने के लिए आई.टी. पार्क की स्थापना की भी योजना है। नवा रायपुर में आई.टी. आधारित रोजगार सृजन हेतु 'प्लग एण्ड प्ले' मॉडल का विकास किया जायेगा, इससे आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन के नये अवसर विकसित होंगे।

बजट में छत्तीसगढ़ सेंटर फॉर स्मार्ट गवर्नेन्स की स्थापना सहित प्रदेश के 168 नगरीय निकायों में ई.गवर्नेन्स के तहत बजट एण्ड अकाउंटिंग मॉड्यूल स्थापित करने के प्रावधान शामिल किए गए हैं। 47 नगरीय निकायों में प्रॉपर्टी सर्वे किये जाने हेतु ड्रोन आधारित सॉफ्टवेयर तैयार किया जायेगा। शासकीय धन के आय.व्यय की दैनिक निगरानी के लिए एकीकृत वित्तीय प्रबंधन सूचना प्रणाली (IFMIS- 2.0) प्रारंभ की जायेगी। पीएम वाणी के अंतर्गत प्रथम चरण में एक हजार ग्राम पंचायतों में वाई.फाई के माध्यम से हॉट-स्पॉट इंटरनेट सुविधा दी जाएगी। वस्तु एवं सेवाकर के संकलन में सुधार एवं पारदर्शिता के लिए राज्य मुख्यालय में बिजनेस इंटेलिजेंस यूनिट की स्थापना की जायेगी। वस्तु एवं सेवा कर संबंधी अपीलीय मामलों के त्वरित निराकरण हेतु अधिकरण की स्थापना की जाएगी।

रायपुर प्रेस क्लब के संविधान में संशोधन के लिए सुझाव आमंत्रित

सदस्य 7 से 13 जून तक लिखित में जमा कर सकते हैं सुझाव, संविधान संशोधन कमेटी की पहली बैठक में लिया गया निर्णय

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर प्रेस क्लब के संविधान में आवश्यक संशोधन किया जाना है। इसके लिए संविधान संशोधन कमेटी का गठन किया गया है। कमेटी की पहली बैठक गुरुवार, 6 जून 2024 को दोपहर 12 बजे प्रेस क्लब सभा कक्ष में रखी गई। कमेटी ने अपनी पहली बैठक में निर्णय लिया कि संविधान संशोधन के लिए सर्वप्रथम सदस्यों से उनके सुझाव आमंत्रित कर लिए जाएं। इसके बाद आगे की प्रक्रिया शुरू की जाए। संविधान संशोधन से पूर्व सदस्यों की ओर से महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हो सकते हैं। इससे संशोधन में आसानी होगी। कमेटी ने प्रेस क्लब सदस्यों से 7 से 13 जून तक लिखित में सुझाव आमंत्रित किए हैं। प्रेस क्लब के सम्मानित सदस्य निर्धारित तारीख तक दोपहर 12 से शाम 6 बजे तक अपने सुझाव प्रेस क्लब कार्यालय में जमा कर सकते हैं। प्राप्त सुझावों पर कमेटी की अगली बैठक विचार किया जाएगा।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354